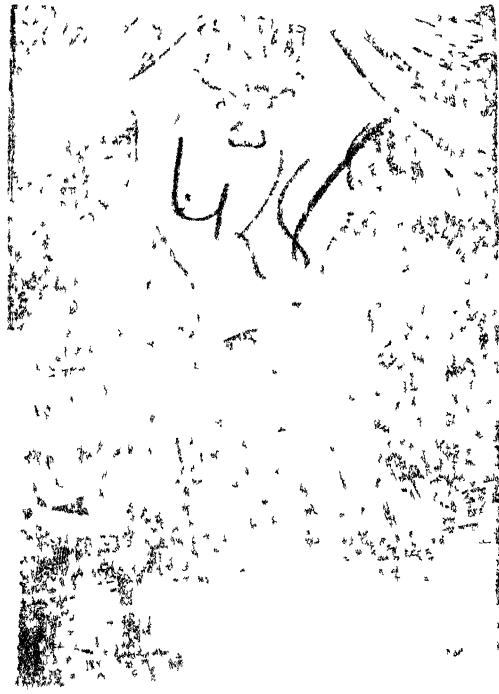


૯૩૦૩

આ રીડા આ રીડા

૯૩૦૩

પિત્તારિકા-આરીડ.



बालबोध हरफ उरदु जवान.

हदीये तुलमुल्लेमीन याने	सोरे मा तम	०-३-०
जरूरीयातेदीन ०-८-०	फरीयाद नामा	०-१-०
शहीदे कर बला ०-८-०	शादी नामा	०-१-०
होफेजुल इस्लाम ०-६-०	वफात नामा	०-१-०
जंगनामा जैतुन ०-४-०	मोलुद गुलजार	
इन्दरसभा बातसवीर ०-३-०	जमान ०-६-०	
किस्सा लैला मजनू	पारे अम्मावतस	
बातसवीर ०-४-०	शाभाकुत ०-३-०	
अहेरे इदक बातसवीर ०-८-०	जोते जवानी ०-२-०	
हुजेजुल इस्लाम ०-२-०	बहार जवानी ०-२-०	
नुर नामा ०-२-०	नध बहारे जमान ०-२-०	
शाहावत नामा ०-२-०	फिराके जाना ०-२-०	
सखावत नामा ०-२-०	गुलसन बहार ०-२-०	
सकरात नामा ०-२-०	बहारे गुलसन ०-२-०	
कि. हलीमावाइका ०-२-०	किस्सा तोता मैना १-०-०	
	किस्सा हातम ताई १-०-०	

जरूरी इत्तला.

खरोदघारेको कीताबें मगते बहुत अपना पुरा पन्ना याने नाम-मुकाम-पोष्ट आदि उरदुमे हो या गुजराती या हिंदीमे हो या इंग्रजीमे हो साफ लीखना चाहिये खत साफ न लीखनेसे उस खतका माल या जवाब नहीं भेजा जाता है. और १ रु. से कम का बी. पी. किसी को भेजा नहीं जाता।

हुसेन मीरझां बुकसेलर ओर पब्लीशर

करी रोड मुंबई पोस्ट नं० १३

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાશિદ વિભાગ]

અનુક્રમાંક ૧૩૦૩ વર્ગીક

પુસ્તકનું નામ પિયા. ૨૧૩/ ૫. ૨૧૩

વિષય ૬૪૬.૮:૩ ૪૬૮

पियारिका आशिक.

पहला भाग.

उलझतका जग मग है डे हो वोली बेकरा ।
दोनों तरफ हो आग परापर लगी दुर्ग ॥

गाविजन कोश पर जैसा न होगा जिसनें व्यतीगढका नाम न सुनाहो, येहशहर उन शहरों में शुमार किया जाता है जिन्होंने सौ परस के अन्दर ही तरकडी की है हम आज नाउरीनका धरसी शहर की सैर कराना चाहते हैं धरदि एक मोहल्ले में एक शान्दार भकान बनाहुवा है उसके एक पहल्ले में एक भरदाना कमरा बना हुआ है उसकी मौजुनीयत मदी शैकीन आवजहा होनेका सम्भूत दे रही है कमरे के समानै वावे पराम्दा में यन्द अशपास की नशिस्त है जिनकी शक्त व सूरत देखने सै मावूमहोता है के धनमें सै किसी की उम्र बीस आठस सात सै न्यादां नहीं है अदके जिस की तरफ मदी होने का शुमान होता है उसनें तो अपनी अहद शपथ में कदम रण्णां है क्योंकि अपनी प्रप

ਸੁਰਤ ਧੋਹਰੇ ਪਰ ਸਭਯ ਅਰ ਆਮਦ ਛਾਂਨਾ ਸੁਫਰੇ ਫੁੱਕਾ ਹੈ ਓਸੇ
ਤਰਫ਼ ਗੁਰੁਤਗੂ ਕਾ ਆਜਰ ਗਰਮ ਹੈ ।

ਐਕ—ਰਿਆਯ ਫੁਸੈਨ ਸਾਹਯ ਆਯ ਸਭਕੋ ਆਯ ਜਲਦੀਤਸਰੀਖ
ਲੇਆਨਾ ਜਰਾ ਹਰਮੋਨਿਯਮ ਸੇ ਤਭੀਯਤ ਘੋਲਾਓਯੇ ਤਮਾਮ
ਦਿਨ ਓਸਕੂਲ ਕੀ ਮੋਘਘਘਤ ਹੀ ਮੇਂ ਗੁਜਰਤਾ ਹੈ ॥

ਰਿਆਯ ਫੁਸੈਨ— ਘੋਲਤ ਅਯਯ ਮੇਂ ਆਨਾ ਆਕਰ ਫ਼ੈਰਨ
ਹੀ ਆਯਯਯਿੰਗਾ, ਛਾਂ ਆਯ ਕਿਤਾਯ ਵਗੈਰਾ ਤੋ ਕੁਝ ਦੇਖਨੀ ਹੀ
ਨਹੀਂ ਹੈ ਮੁਝਕੋ ਭੀ ਕੈਓ ਦਿਨ ਗੁਜਰ ਗਯੇ ਹੈਂ ਰਾਤ ਦਿਨ
ਕਿਤਾਯਹੀ ਜੇਰੇ ਨਜਰਰਹੀਹੈ ਆਯ ਖੁਦਾ ਖੁਦਾ ਕਰਕੇ ਮਾਸਟਰ
ਸਾਹਯਨੈ ਓਮਿਤਨ ਅਤਮ ਕਰ ਦਿਯਾ ।

ਮੁਨੌਰ ਅਲੀ—(ਟੀਸਰੇ ਸਾਹਯ) ਘਾਓ ਛਾਂ ਆਯ ਜਰੇ
ਆਹਿਯੇ, ਯੂਕੀ ਕਿਸੀ ਆਕਿਲ ਕਾ ਕੈਲ ਹੈ “ਰਾਗ ਰੁਖ ਕੀ ਗਿਅ
ਹੈ” ਲਿਖਾਯ ਆਯ ਦਿਮਾਗ ਕੋ ਅਰਾਮ ਮਿਲਾ ਹੈ ਜਰਾ ਤਕਰੀਫ਼
ਸੈ ਫੁਰਸਤ ਕਰਨਾ ਆਹਿਯੇ ਮਗਰ ਅਲੀਲ ਅਹਮਦ (ਪਹਲੇ ਸਾਹਯ)
ਆਯ ਤੋ ਹਮ ਰਿਆਯ ਫੁਸੈਨ ਸੈ ਕੁਝ ਜਰੇ ਸੁਨੇਗੇ ਯੂਕਿ ਘੋਲਤ
ਦਿਨ ਗੁਜਰ ਯੁੱਕੇ ਹੈਂ ਅਸ ਵਹੀ ਗਯਲ ਸੁਨਾ ਦੇਨਾ ॥

ਦਿਲਹਮਨੈ ਓਸ ਸਨਮਕੋਦਿਯਾ ਫ਼ਿਰਕਿਸੀ ਕੋ ਯਯਾ) ਧੋਹ ਘੋਲਤ ਹੀ
ਘਲੀ ਮਾਯੂਮ ਹੋਤੀਹੈ ਤੁਮਹਾਰੇ ਮੁਖ ਸੇ ਅਲੀਲ ਅਹਮਦ—ਛਾਂ ਧੋਯ
ਗਯਲ ਗਯਯ ਕੀ…… (ਲਪਕੇ ਕਰ ਦਵਾਨੇ ਪਰ ਘਡਾ ਹੋਯਤਾ ਹੈ)

ਰਿਆਯ ਫੁਸੈਨ—(ਦਿਲ ਥਾਮੇ ਫੁਯੇ ਵਾਪਿਸ ਆਤਾ ਦੇਖ ਕਰ
ਯਯਾਂ ਯਯਾ ਹੈ ! ਡਾਨ ਥਾ,

બલીલ—કુછ નહીંઉફ (કહ કર દમથામ લેતા હૈ)

રિયાજ— (ઉઠતે હુયે) ક્યા હૈ, દેખું તૌ ક્યા હૈ (બાહર દેખતે હુયે) ફિર આપકો ક્યા વો બરહી હૈ કિસીકા રાસ્તા ખાન્દ કરતે હો

બલીલ—અરે સાહબ ક્યો છેડતે હો વદલાહ તુમને દેખા નહીં સચ કહેતાહું “હાય ગજબ કરગઈ,, મેને તો ઈસ પરી શુમાઈલ કો આજહી દેખા હૈ ઈસ સે પેશતર કબી નહીં દેખા ન માલૂમ કમખખત ઉસ શોખ ચિતવન મેં ક્યા અસર થા દિલ ખીંચ કર ચલા ગયા અખ નમાલૂમ ઇસકા અંજામ ક્યા હોગા ॥

કદમ અખ ઈરક કે દરયા મેં ડાલા ॥

તવકુલત આલા અદલાહ તાંલા ।

મુનવર બલી—ભાઈ હસીન તો ગજબ ડી હૈ વોહી સખ્ખ સાડી વાલી હોગી, જીસકી સૂરતદેખ કર ખેસાખ્તા વોહ શૈર જખાન સૈ નિકલ જાતા હૈ

પુદાયા કેસી કેસી સૂરતેં તૂને બનાઈ હૈ ॥

કે હર સૂરત કલેજે સૈ લગા લેને કે કાખિલહૈ ॥

બલીલ—વોહી બલિમ હૈ જો કે મેરે દિલ કો અપની ઠશિર મિકનાતીસ મૈ ખીંચ કર લેગઈ ઔર બર્ક તખસુમ ગિરા કર ખાક શ્યાહ બના ગઈ.

सेर.

तड़गो तीर जहिर न था कुछ पास कालिल के,
 धिलाही फिर जे दिलपर ताक मारा तो क्या माया,
 रियाज—तो क्या सय मुय उसपर लोट गये और राह
 धरकमें कदम पड़ा दिया मैने तो मजक तसव्वार कर रहा था
 मगर पलील साहज याद रખिये ॥

येह धरक वो है के पत्थर को दम मैं व्याप करै,
 करै धरक कि ल स को पुदा भराप करै,

अस्तरांन हजरह तारीक़ात किताबमें मुलाहिज की होगी
 मियां कलीस को अयाडे छनवाई मिस्टर दरहाद के शात कैसा
 सलूक किया—यशमये शीरी निकाला जन तक देदी मगर—गोयर
 मकसद मिला फिरभी न कुछ दरहादको दुसरै व्याप मुहम्मदिन
 और वो काम हिनूदसै धिस का नतीज इसवाई और पदनामी
 तक ली महदुद होगा ।

पलील—अप न्याहै नासह न अनिये ।

येह कहां डी दास्तीहै के अने है दास्त नासह ।

कोई खेरा साज होता कोई गम गुसार होता ॥

जय दिलसै पहलू निकल युका हो तो डान नसीहत सुनै
 और डान असल करे:—

रिमाज—मैने तो सिई अंजाम से अगाह डीया है पदाल
 किसी के—

मानों न मानों जाने जहां अभ्युत्थार है ।

हम नेको पद दुजुरे को समझाये जाते हैं ॥

और हम हरतह शरीर हाल है मोड़ के मुन्तज़र रहो ।
येह हम ने ताउ लिया वो यहीं की है कभी न कभी तो
रसाई हो जय्येगी—

पत्नील—वाहकेली भूष कही यहां अक भिनट अक साक्ष है
अक्षोस में ली पाक शहरमें जाहताहूँ येहलीनही भाव
म के उस गुलका किस यमन में धरहै और वो किसमाह
की जगर पाराहै:—

रियाज—में भूष जन्ताहूँ आपू लक्ष्मी नारायन की लउकी
है अक्षर तुमनेली देखा होगा— भूषसूरत सै आदमी है
किस्ती कहर निरम ली है दौसो इपया तनज्वाह परकिस्ती
रियासत में मुलाज्महै आजतो शायद यंहीं भौजुह है—

अरज्ज अय आप आराम कीज्ये देपो क्या तरकीब
निकासत हूँ यारो की कराभाते देपो अय रकूलसे आये हु अ
अरसा हुआहै अय मकान पर हो आवे रातको पात होगी—
मुनब्बर व रियाज यल दिये और पत्नील तनहाई में इये
यार का कौट लेता रहा—नाजरीन न समझे होगे— पत्नील
अहमद कुछ आज ही का आशिक नहीहै पदके छोटी उम्र
में धसके साथ भेजा है और जय हीसे धनमें कुछ आपसमें

उलझत है इसकी वजह येही है कि पत्नील अहमद के वालिद
 भायू लक्ष्मी नरायन के मकान के सामने रहते थे (जसका
 तकरीबन ढाघ तीन साल के होगये हैं) मगर अप्तक दानोंमें
 उलझतकी शमा रेशन है और अप्त जमाने शयाप्य की तेज
 हवाने इसका पकड़ा दिया है धन ढाघ तीन साल में धन
 दोनों की कुछ से कुछ हालत होगई हुस्न शयाप्य से डान
 वाकिफ नहीं—मगर पत्नीलने आज तक किसी तरह पर
 बहिर न कीया पकड़े दिल् ही दिल्में धरकके शैलोंका परदारत
 करतारहा आज धत्तक से येसाप्तगी की हालतमें जप सप
 पर धनहार होगया तो इसने नये पहलूसे दस्तोसे मदद
 याही और अपनेका गिरफ्तार उलझत का बताया:—

दुसरा भाग.

शेर—जजमे मोहप्यत का यमनमें पूछतो गुलसे ।
 के दामानें तहम्मुल याक है दर्याद गुलगुल से ॥

मुसराल का प्त

भायू लक्ष्मीनरायन साहय का मकान बी शहरके मामूली
 मकानों से अरखेमें शुमार कीया जाता है इसका पाला पाना
 निहायत उम्दा वज्र का है सामने नक्षीस तारों के जंगले
 लगाये गये हैं और काठ के मुनककश महाराजदार दर बनाये

गये हैं जूनपर निहायत सफाई से सफ़्फ रंग डीया गया है
 भइरायोमें निहायत पुरा मतलुबी के साथ उम्दा उम्दा धमले
 रये गये हैं जे धनकी पुण सूरती के दुआला कर रहे है
 मकान के अंदरनी हिस्से में दालान है जिस में साहुण पाना
 पायू लक्ष्मीनरायन—प्यारी डी मा तुम ने वो भत देया जे
 प्यारी डी सुसराल से आया बगवती (प्यारी डी मां) नही
 मुझे मातुम तक नही—ज्यों ज्या लिपते हैं

लक्ष्मी नरायन—यम्मा—(नौकरनी) मेरे डाट के जय से
 वो भत लाना जरा धनकाबी दिपलाहुं देयायु किशोरीलाल
 (समधी) अय्य ज्या रंग लाये हैं—हमने पहलेही कहा था
 के धन लोगों से रिशत करना सरासर जेक जगडे का मौल
 लेंना है—यम्मा झारन दौडी गधे ओर भत लाकर दे दिया
 पायु साहुण डी आंखें गुस्से से मुर्झ होगध ओर भत के
 धिस तरह सुना ने लगे

॥ भत ॥

जनाय पायु लक्ष्मी नरायन साहुण—तसखीमात आपका
 धितलायन कदमी डीया जाता है अफ़सोस पार पार आपका
 तहरीर डीया के लडकी का गौना करदो भगर आपने न डीया
 अय्य लडके के भत से मातुम हुआ के उसने शादी दुसरी
 करदी लडका जवानुव उभ्रथा ज्या करता गां उसने मेरी

ખીલા રત્નમંદી એસા ક્રિયા-- મગર વો મુઝેકો સદહા પુતૂત મેં
તહરીર કર ચુકા થા કે પુલા લિયા જવૈ--ખૈરજો કુછ હૂઆ
સો હૂઆ અગર આપ પંદ્રહ જુનમે કે અંદર યહાં પોંહયાવે
તો ખૈર વરના હમ જુમમેઘાર નહીં હૈ ફક્ત

કિશોરી લાલ

લક્ષ્મી નરાયન--અખ ક્યા કીયાજઅ તુમ લોગોં કે કહને
મેં મેં અકર ખજુજ તુકસાન કુછ નહીં--

છોટી ઉમ્રમેં શાદી કરદેનેકા ક્યા નતીજ હૂઆ અખ ઈસ
હાલત મેં ભેજના ખહેતર હૈ આર મેં ભેજુંગા હરગિજ નહીં--

ભગવતી--અખમેં ક્યા કરું ઇન લોગોં કે અંદર કે હાલ સે
આગાહ નથી ખૈર જો કુછ હૂઆ વો અપને દિલમે સમઝતે
હી ક્યા હૈ આર યેહ જો ઉન્હોનેં લિખ્યા હૈ કે મેરી ખિલા
રત્નમંદી ખિલકુલ ગલત હૈ યેહ મુમકિન હૈ હર ગિજ નહીં
યેહ એક તરકીબ હૈ યેહસખ ઈનકીહી કરતૂતહૈ વો લહકા બડા
સીધા હૈ વો યેહ સમઝતેહૈ કે પ્યારી કો રોટી કપડા ન મિલેગા
પરમેશ્વર દેને વાલાહૈ યહાં ઈતના મૌજુદ હૈ કે પ્યારી કે
અલાવા આર ચારકો ખિલા સકતે હૈ યેહ કુછ જરૂરત ઈસકે
જવાબ દેને કી નહીં હૈ વો દો બહૂએં લાકર ખિલાલાવેં હમ
પ્યારી કો હરગિજ ન ભેજેંગે લલા હમ અખ ઉનકે લિખને
પર કિસ તરહ ભેજદે--અચ્ચી થી આર અખ ભી કાંન બડી

हैं पुरे चौबहू की भी नहीहुई कलड़ी मैने जन्म पत्री देखी थी-- कहीं आसाठ में नकर साल पुरा होगा

लक्ष्मी नरायन--में हरगिज ऐसी हालतमें लेज नहीं सकता और लेजना कैसा डे दैने भी आया हो, उनका मतलब येह है--उनकी गरज होगी तो पुढ कर जयगे गोया उनहोंने हम डा मजपुर जना है हमका जइरत क्या है डेई गुडा तो है नही कि लट्टी डा डैक आये होमोण प्यारी की हरतरह आतिर व हिलजेई रक्यो वो किसी किरम का प्यास हिलमें न लाये पायुसाहय येह कहते हुये मरदाने कमरे में गये--अब हम लगवती डा छोड कर बिपर वाते कमरे में चलते हैं जहां प्यारी अपनी हमजेलियों में बैठी है

रामदेई--अहन अब तुमभी तुमहारी सुसरास से भी भुलावे का भत आगया अब यहा हो घड़ी बैठ कर हिल पुश करलैने का वसीला भी जता रहेगा

गौमती--हां अहन येह तो यही भगर ईन्है क्या है येह वहां डे मजेमें हम लोगोंडा बूल नयेगी हम ईनका याद करते रहेंगे

रामदेई--अहन कहीं ऐसा न करना कभी हो भोल भत से तो जइर याद कर लिया करना ऐसा नहो कि वहां डे अश डे आगे अर्धों साथ पढने और भेलने वालियों की उलझत

हो जात में भिड़ाहो शरमाती क्यों हो बोलती क्यों नहीं हो
दिलमें तो जहोत पुश हो (अट से सीने पर हाथ रख कर)
दृष्टुं दिलका पुशीके भारे क्या हाल है प्यारी (भिगड कर) यलो
रहनेहो में ऐसी दिल्लीगी नहीं चाहती हरवक्त ऐसीजाते
अच्छीनहीं लगतीहैं येहू कहे कर ईरन उसकी आंभों से
आंसू निकल आये

रामदेव—जहन गोमती यलो आज भिन्न अछा नहीं
जरा जरा सी जात पर आंसुं जहाये देती हैं परमेश्वर
जने इसदिन सै धनकी हालत कैसी हो गध है अस दिनसे
हम मन्दर से दरशन कर कै आये हें येहू ऐसी ही हरवक्त
पडी रहती है और जरा जरा सी जात पर भिगड जाती है
कैसी ही पुशी की जात क्यों नहो मुसकराहट तक लयों पर
नहीं आता वोही असल है आगे आती थी हाल दिलपे हसी
किसी जात पर नहीं आती ॥ येहू कहती दुर्घ दानों यकी
गध अगर प्यारी नै तबज्ज नकी धिस वक्त धनका यले जाना
हमारी प्यारी के वास्ते गोया एक जलाका टलना हुआ क्यों
के धनके यले जाने से एक भुतसन्वरा पिलवत में उसके
असल था अज पदस्तूर सामिक सुरत सामने आई ॥

प्यारी—हां तो क्या येहू सय है कि भुजसे दिली उन्सीयतहै
भुज होतो यकीन नहीं आता वो उम् और थी, जज

ਕੀ ਉਲਫ਼ਤ ਅਘ ਤਕ ਤੁਝੋਕਾ ਕਯਾ ਰਹੀ ਛੋਗੀ ਛਾਪ ਵੇ ਅਥਪਨੇ
 ਕੀ ਉਮ੍ਹ ਕੁਛਾਂ ਘੁਵਾਯੋ ਘੁਵਾਲ ਛੋਗਥ ਕਯਾ ਤੁਝੋਕਾ ਯੇਹੁ ਮਾਲੁਮ
 ਹੈ ਤੇ ਮੇਰੇ ਦਿਲਮੇਂ ਪਹੁਲੇ ਸੈ ਅਫਰਾਜ ਨਵਾ ਮੋਹੁਘੁਪਤਪੈਦਾ ਛੋਗਥ
 ਹੈ ਕਯਾ ਮੇਰੀ ਮੋਹੁਘੁਪਤ ਕਾ ਮੁਕਾਘਲਾ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੈ। ਅਗਰ ਕਰ
 ਸਕਤੇ ਹੈ। ਤੋ ਕਯਾ ਅਘ ਤਕ ਧੂੰ ਛੀਂ ਆਮੋਸ਼ੀ ਰਹੁਤੀ ਕੁਛੀਂ
 ਵੋਛੀ ਮਸਲ ਤੋ ਨਹੀਂ ਛੁਧ ਗਰ ਗਧੇ ਤੇ ਕਾਨਮੇਂ ਕੁਛੇਂ ਤੇ ਛੁੰ
 ਤੁਝਪਰ ਖਿਦਾ ਹੈ ਧਕੀਨ ਕਾਮਿਲ ਕਿ ਵੋਛੀ ਐਤ ਆਨਾ ਓਡਦੇ
 ਘੋਵੇ। ਆਜ ਯੇਹੁ ਆਮੋਸ਼ੀ ਹੈ ਅਘ ਕੈਸੀ ਆਫ਼ਤ ਛੋਗਥ ਹੈ
 ਤੋ ਐਕਸ਼ੈਰ ਕਾ ਜਘਾਘ ਘਾਰ ਸ਼ੇਰੇਮੇਂ ਦੀਯਾ ਕਰਤੇ ਥੇ ਆਜ ਵੇ।
 ਸ਼ੈਰ ਗੋਥ ਕਯਾ ਛੋਗਥ ਮਾਂਤ ਵੇਦੀ ਯਾ ਘੋਦੀ, ਪਰ ਛੁਟੀ ਅਘ ਨ
 ਅਫ਼ਸਨਾ (ਐਕਾ ਐਕ ਬਾਂਕ ਕਰ) ਹੈਂ ਮੇਂ ਕਿਸ ਸੈ ਆਤੇ ਕਰ ਰਹੀ
 ਛੁੰ ਧਛਾਂ ਕੈਨ ਹੈ ਜੇ ਜਵਾਘ ਵੇ ਛੋਥ ਸੁਨੈ ਤੋ ਮੁਝੇ ਕਯਾ ਕੁਛੈ
 ਅਰੇ ਮੇਰੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਮੁਝੇ ਕਯਾ ਛੋਗਯਾ ਤੇ ਮੁਝੇ ਅਪਨੀ ਝੁਲਵਾਥ
 ਕਾ ਲੀ ਘੁਵਾਲ ਨਹੀਂ, ਐ ਕਘੁਪਤ ਉਲਫ਼ਤ ਤੁ ਕਯਾ ਘੀਜ ਹੈ
 ਤੇ ਆਫ਼ਮੀਤੋ ਘਿਲਕੁਲ ਪਾਗਲ ਆਰ ਅਪਤੀ ਅਨਾ ਵੇਤੀਛੇ ਸਾਮਨੇ
 ਐਕ ਫ਼ਰਾਜ਼ ਤਸਵੀਰ ਲਾਕਰ ਅਤੀ ਕਰ ਵੇਤੀ ਹੈ ਤੇਰੇ ਤੁਪਤ ਮੇਂ
 ਕੁਛੀ ਸਮਰ ਆਤਾਛੈ ਯਾਮਿਰਲ ਸਮਰਕੇ ਛੁਮੇਸ਼ਾ ਐ ਸਮਰ ਰਹੁਤਾ ਹੈ
 ਸ਼ਾਯਦ ਤੁ ਮੁਝੋਕਾ ਐ ਸਾਛੀ ਜਵਾਘ ਵੇਤੀ ਨਜ਼ਰ ਆਤੀ ਹੈ

ਸੋਰ—ਮੈਂ ਵੇ ਨਾਪਦੇ ਐ ਸਮਰ ਛੁੰ ਜੇ ਪ੍ਰਸੂ ਤੋ ਫ਼ਲ ਨਾ ਆਏ ਐਥਾਂ ਤੁ
 ਅਘਤਕਫ਼ਲਤੋ ਕਯਾਫ਼ਲ ਤਕਕਾਛੀ ਨਿਸ਼ਾਨਨਹੀਂ ਮਗਰ ਕੁਛੀ ਐਸਾ

नकरना औ परमेश्वर मेरी एसि प्रार्थना को कय्युल करना और मुझ को लक्षण यास आशानाना करना--यवो येह अतर हुवा एसि अत के आनने से ओक अटका तो भिटाया मगर कही औसा न हो के फिर मुझे बेजने की राय होअये.....नहीं क्यों आके लाजा (वासिद) ने तो अछा जेर देकर येह आत कही है कि हम हरगिज न बेजगे पेर हाथ कोई धतना तक बी तो नहीं के असको अपना हमराज बनाधि और अपने दिव का माजरा सुनागे ॥

तीसरा आध.

जगर में युटकिया लेती है हर तरफे दुगाभेरी
कहा सै लायेगा कसिद दहन मेरा जग्या मेरी
क्या तदवीर की

रात का वो, हिस्सा असको सुअह सादिक कहते हैं कुछ अजग्य सोझाना वक्तहै आटे सहरी के ठंडे ठंडे ओके कुछ एसि अन्दाज सै चलते हैं के वो मरीज बी जे तमाम शयशिदत कर्षसेकरा हते रहे है और पलक सै पलक नहीं लगा है एसि वक्त सो गये हैं मगर मरीजन ईशक पर धनका बी कुछ असर नहीं उनको नीद कहा अकौलशेर,

असकादिव दिहवारमे हो उसको कय आतीहै नीद
करवटे लेते साक्ष उठ जाती है नीद ॥

વો દેખિયેના સામને હમારા દિલ હીરો ખલીલ મિલેલ માહી
 બે આખ મસેરી પર તડપ રહા હૈ વો કરવટ બદલી આર
 આદર સે મુંહ ખોલ કર કુછ કહેને લગા, હાય અલ્લા કયા કરે
 આજ કી રાત બી પહાડ હૈ કે કાટૈ નહીં કડતી,
 યા ઈલાહી શબૈ દુરકત કી સહર હૈ કે નહીં,,

ટન.....ટન.....ટન.....ટન.....ટન.....ટન ચલો છૈ બજગયે
 સુખહ હોગઈ, ઉઠકર લાંબકો ગુલ કીયા કામ જરૂરી સૈ શારિંગ
 હોકર ખેઠેલી થૈ કે--

અચ્છી તરહ દિન નિકલ આયા નાવિલ હાય મેં હૈ મગર
 નિગાહ જમીન પર હૈ આર અપને કિસી ખ્યાલમેં મુસ્તાફે હૈ--
 રિયાજ હુસૈન સર પર ખડે કહ રહે હૈ--કહિયે હજરત ક્યા
 હાલહૈ દોહી રોજ મેં યેહ હાલ બના લિયા--મગર વહાં કોન
 હંસતા હૈ ગૌયા લાલ લક્ષ્મી નરાયન કે ખાલે ખાને પર હી
 મૌનુદ હૈ

રિનાજ હુસૈન (ખાનુ હિલાકર) અરે ભાઈ કયા કર રહે હો
 કેસા ઝિજગ હૈ ઘંટા ભરસે ખડે હૈ જો અખ તક ખખર નદારત
 ખલીલ (ચૌક કર) અચ્છ આપ આગયે હમારી હાલત
 ક્યા પુછતે હો-યેહશુક હૈ અહસાન હૈ અલ્લા કા ,, પુછતે
 ક્યા હો ગરીબોં કા મિઅજ . આપ કી બલાસે આપ હો રોજ

ਸੇ ਕੁਛਾਂ ਰਹੇ ਰਿਆਜ—ਅਰੇ ਧਾਰ ਦੋ ਰੋਜ ਕਯੋਂ ਲਗਾਏ ਦੇਤੇਛੋ
ਸਿਰ੍ਹ ਕਲਹੀਂ ਤੋ ਕਯੋਂ ਕੇ ਵਾਲਿਦ ਸਾਹੁਯ ਧਰਗਯੇ ਫੁਕਾਨ ਪਰ
ਐਠਨਾ ਪਡਾ

ਅਲੀਲ—ਐਰ ਕਹਿਯੇ ਕਯਾ ਤਦਘੀਰ ਕੀ ? ਦੋਸਤ ਮੇਰਾ ਪੁਰਾ
ਹਾਲ ਹੈ ਮੇਂਨਹੀਂ ਜਨਤਾ ਕੇ ਸੀਨੇ ਮੈਂ ਅਜਯੇ ਦੀਲਕੇ ਕਯਾ ਧੁਸ
ਐਠਾਹੈ ਕੇ ਐਕੇ ਲਹੁਮਾ ਐਨ ਨਹੀਂ ਅਛੋਤ ਕੁਛ ਈਸ ਆਲਾ ਕੇ
ਦਿਲ ਸੇ ਟਾਲਤਾ ਛੁੰ ਮਗਰ ਨਾ ਕਾਮਯਾਬੀ

ਰਿਆਜ—ਬਲਾ ਧਾਰਘਾਂ ਅਸ ਆਤ ਕਾ ਵਾਐਦਾ ਕਰੇ ਵੋ ਪੁਰਾ
ਨਹੋ—ਮੈਨੇ ਵੀ ਉਸਕੀ ਕੁਛਾਰਨ ਕੋ ਡੈਰ ਪਰ ਬੇਠਾਯਾ ਹੈ ਜੋ ਆਸ
ਵਹੀਂ ਪਰ ਪਾਨੀ ਭਰਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਬਿਸੇਸੇ ਦੇਕਰ ਰਾਹਪਰ ਲਾਯਾਛੁੰ
ਧਾਰ ਅਤੇ ਗਯਾ ਕੀ ਐਰਤ ਹੈ ਬਲਨੇ ਮੈਂ ਤੋ ਪਤਾਂਗ ਕੀ ਤਰਫ
ਉਡਤੀ ਹੈ ਤੁਮ੍ਹਾਰੀ ਤਰਫ਼ ਸੇ ਆਤੋ ਮੈਂ ਐਸਾ ਮਾਂਤਾ ਹੈ ਕਿ
ਉਸਕੀ ਹਰ ਐਕ ਆਤ ਕੋ ਕਾਟ ਕਾਟ ਦੇ

ਅਲੀਲ—ਐਰ ਧਾਰਘੇ ਘੁਦਾ ਈਸ ਵਜ਼ਤ ਅਲੈ ਅੰਦੀਕਾ ਰਹਨੇ ਦੋ
ਯੇਹ ਬੋਝਲੇ ਲਗਾਨੇ ਲਾ ਵਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਸ ਰੋਜ ਵੋ ਹਮਕੋ
ਉਸ ਕੇ ਹਾਤ ਕਾ ਪਾਨ ਪਿਲਾਵਾਏ ਤੋ ਹਮ ਉਸਕੋ ਸੁਰ੍ਹੰਦ ਜਨੇ
ਐਰ ਜਘ ਯੇਹ ਤਾਰੀਖ਼ਾਤ ਫੁਰਸ਼ਤ ਦੋ ਅਘਤੁਮ ਜਲਦ ਅਤਲਾਘੋ
ਵੋ ਕੁਛਾਂ ਹੈ

ਰਿਆਜ— ਅਘਤੋ ਆਤੀ ਫੋਗੀ ਉਸਨੇ ਈਸ ਵਜ਼ਤ ਆਨੇ ਕਾ
ਵਾਐਦਾ ਕੀਯਾ ਹੈ ਤੁਮ ਅਤ ਲਿਘ ਰਘੋ ਅਿਸ ਮਿਦਲਾ ਕਰੋ ਈਸ਼ਾ
ਅਦਲਾ ਦੇਖੋ ਕਯਾ ਅੰਜਮ ਅਐਰ ਹੋਤਾ ਹੈ

ਘਲੀਲ-ਤੁਮਕੋ ਮਜ਼ਕ ਹੀ ਸੁਆ ਹੈ ਅੰਯਮ ਘਯੈਰ ਛੋਤਾ
ਹੈ ਘੁਘ ਮਗਰ ਦੋਸਤ ਵਾਡੇਓ ਕਲਤੋ ਅੰਯਮ ਘਯੈਰ ਛੋਤਾ
ਘੁਰੀ ਛਾਲਤ ਥੀ "ਵੋ ਵੋ ਆਓ ਸ਼ਾਯਦ ਵੋਹੀ ਹੈ ਕਾਵੀ ਸੀ

ਘਲੀਲ-ਹਾਂ ਵੋਹੀ ਹੈ ਕਾਵੀ ਕ੍ਯਾ ਨਾਮਲੀ ਕਲਵੋ ਹੈ ਘੜੀ
ਬਲਤੀ ਛੁਛ ਹੈ ਉਸਕੀ ਤਮਾਮ ਉਅ ਓਸੀ ਕਾਮੋ ਮੈਂ ਗੁਜਰੀ ਹੈ
ਘੈਰ ਕਲਵੋ ਕੋ ਸਮਝਾ ਘੁਆ ਕਰ ਘਤ ਦਿਆ ਗਯਾ ਭੁਸ ਕੋ ਲੇਕਰ
ਵੋ ਰਵਾਨਾ ਛੁਓ, ਘਤ ਕਾ ਮਯਮੁਨ ਹੁਲਾ ਜੈਲ ਥਾ ,,

ਸ਼ੇਰ.

ਕੁਛਾਂ ਸੇ ਲਾਯੋਗਾ ਕਾਸਿਦ ਘਯਾਂ ਮੇਰੀ ਜਘਾਂ ਮੇਰੀ ॥

ਮਯ ਜਘ ਥਾਓ. ਘੁਛ ਸੁਨ੍ਤੇ ਵੋ ਮੁਝਸੇ ਦਾਸਤਾਂ ਮੇਰੀ

ਘਾਰੀ-ਸ਼ਾਯਦ ਯੇਛ ਲਕ੍ਯ ਅਲਕਾਘ ਮੈਂ ਲਿਖਨਾ ਨਾ ਗਵਾਰ
ਛੋਗਾ ਮਗਰ ਉਲਕ੍ਤ ਮੁਝਕੋ ਓਸ ਮਕ੍ਯ ਓ ਤਹਰੀਰ ਕਰਨੇ ਪਰ
ਮਯਘੁਰ ਕਰਤੀ ਹੈ ਮੈਂ ਕ੍ਯਾਕੁੰ ਗੋ ਮੈਂ ਐਕ ਕੈਮ ਦੀਗਰ ਸੇ ਛੁੰ
ਯਾਨੀ ਮੁਸਲਮਾਨਛੁੰ ਮਗਰ ਕਿਸੀ ਘੁਤ ਕਾ ਘੰਦਾ ਘਯਘਨਛੀ ਸੇ
ਛੋ ਘੁਕਾ ਛੁੰ ਵੋਹੀ ਮਸਲ-

ਸ਼ੇਰ.

ਸਲਾਵਾ ਛੋਸ਼ ਤੋ ਮਰਨੇ ਲਗੇ ਹੁਸੀਨੋ ਪਰ ,,

ਹੁਮੈਂ ਤੋ ਮੋਤ ਹੀ ਆਓ ਸ਼ਾਘਾਛੇ ਘਲਵੇ ,,

ਓਸ ਕਮਘਘਤ ਉਲਕ੍ਤ ਪੇਂ ਕੁਛ ਮਯਘੁਘ ਵ ਮਿਲਵਤ ਕਾ
ਘਯਾਲ ਨਹੀਂ ਰਹਤਾ ਛਾਘ ਮਗਰ ਮੈਂ ਤੁਮ ਕੋ ਘੁਤ ਕ੍ਯਾ ਕਯੋਂ ਕਰ

ਲਿਖੁੰ ਤੁਮ ਮੁੜ ਪਰ ਘੜੀ ਘੜੀ ਮਹੇਰਆਨਿਆਂ ਕਿਆ ਕਰਤੀ ਥੀ
ਤੁਮਹਾਰਾ ਦਿਲ ਤੋ ਮਿਲੇ ਮੋਮ ਫੇ ਥਾ ਅਘ ਵੋ ਪਾਥਰ ਸੇ ਘਟਲ
ਗਯਾ ਛੋਗਾ ਖੁਦਾ ਨਾ ਕਰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਜ਼ਿਆ ਲਿਖੁੰ ਰਹਮ ਕਾ ਖ਼ਵਾਸਤ ਗਾਰ ਹੂੰ

ਤੁਮਹਾਰਾ ਘਟ ਨਸੀ ਅਵੀਲ

ਰਿਆਜ਼ ਹੁਸੇਨ ਅਤ ਦੇਖਨੇ ਫੇ ਮਾਂਗਨੇ ਲਗੇ ਮਗਰ ਜ਼ਦਦੀ ਸੇ
ਅਵੀਲ ਨੈ ਲਿਖਾਫ਼ ਘਟ ਕਰਦਿਆ ਝੋਰ ਉਸਕੇ ਛਾਤ ਮੇਂ ਫੇਕਰ
ਰਵਾਨਾ ਕੀਆ—

ਅਛਾੜਮ ਆਖ਼.

ਜ਼ਿਆਂ ਲੀਡ ਮਕਨ ਫੇ ਹੈ ਦਰ ਪਰ ਲਗੀ ਫੁਧੰ,
ਪ੍ਰਾਸੈ ਸਭੀਲ ਹੈ ਸਰੇ ਫਾਸਰ ਲਗੀ ਫੁਧੰ;

ਮੈ ਆਨਾ

ਉਸ ਵਸਤਕਾ ਮਛਮਾਨਲੀ ਕਾਘੀਲੇ ਦਿਓ ਹੈ ਆਸਮਾਨ ਪਰ ਖੜਾ
ਘਾਓ ਫੁਧੰ ਹੈ ਕਲੀ ਕਲੀ ਨਹਨੀ ਨਹਨੀ ਖੁੰਦੇ ਲੀ ਪਠਨੇ ਲਗਤੀ
ਹੂੰ ਮੈ ਆਨੇ ਮੈ ਹਯੂਮ ਹੈ ਕਿਸੀ ਆਦੇ ਨੋਸ਼ ਕੀ ਆਵਾਜ਼ ਹੈ—
ਸ਼ੇਰ.

ਤੋਆ ਕਰ ਅਛਿਓ ਕੜੇਂ ਤੋਆ ਮੇਂ ਐਸੇ ਵਸਤ ਮੇਂ,

ਧੇਓ ਅਛਾਰ ਆਓ ਫੁਧੰ ਝੋਰ ਧੇਓ ਖੜਾ ਘਾਓ ਫੁਧੰ,

ਨਾਜਰੀਨ ਜੋ ਹਰਜ਼ ਤੋ ਹਮਾਰਾ ਲੀ ਜ਼ੜੇਛੋਗਾ ਜ਼ਯੋਂਕੀ ਹਮਕਾ

ਤੋ ਮਿਲਦਰ ਅਵੀਲ ਅਛਮਕ ਫੇ ਮਕਾਨ ਪਰ ਅਨਾਥਾ ਮਗਰ ਧਵਾਂ

के लुट् भी काभीने दीद होते है आज तो हम भी यंही
के लुट्केका मशाहिदा करंगे वीज्ये को शराब का मतवा-
ला अपनी धुनमें गजल उड़ा रहा है-

गजल.

करके हम सूरये छिपनास पिना सकी,
या वही लुल लुल शेष की दुआ दे साकी,
गर कोई ईल कर पीक शरीरतके पिनाइ,
किरतो अशकभुजे सुली पे यडादे साकी,
नाम जम जम तेरा में जाना हस्ती में रहै,
दे दे एक जम प्यासा की दुआ ले साकी,
देमा किस किस को तु मै किस को दिमायेगा जमल,
सम के सम टरे तेरे यादने वाले साकी,
कोई छोटी अहर में रट लगा रहा है-

गजल मोलिइ.

कुजये मै धर को ला साकी आज तो लर के ल पिना साकी,
हो जहा नसीबी का भैदे, मस्त अपना मुजे पना साकी,
उट के पीने दे आज तुझका, जम मुह से त तु हटा साकी,
तु पिनाये जे सुझका जम पेजम, हर्ज क्या है तेराजना साकी,
येवो वो एक गोख आया है यह तो चौकडी ही सदन
में दरफ्त के नीय ही छिटक गध-यसिये वहां यलै-

एक-मशाहरा होने दो-शिइ-

दुसरा-येह वीज्ये:-

शेर.

अ शेभे जे कहे में गुल रंग डो हमार,
असे के अस लगाये सर पर उतार पांय,
तीसरा—बिलकुल दुरस्त मेरा बी साद है:—

शेर

कुछ शान भगविरत से नहीं दूर नहिं हो ।
इसे गुनाह पादह कशो के शराब में ॥
पहला—हां—

शेर

नहिं ने कह भुरी कि येह दीवाने आदमी हैं ।
तुझे लिपट पड़ेगे येह मस्ताने आदमी हैं ॥
बैथा—अक मुझे बी याद हैं:—

शेर

में छिडे छिडार पै पी है रमजन में ।
येह कर्ज अदा हो तो जडा कर्ज अदा हो ॥
दूसरा—जजक अदला—

शेर

सबल करके अलिये जरा शेभ सादय ।
येह में जाना है किजल काया नहीं है ॥
तीसरा—वाहवाह किजला काया नहीं है मुनिये

ਸ਼ੇਰ

ਮੁਹਤਸਿਘ ਪਥਰਹੈ ਦਿਲ ਤੇਰਾ ਤੇਰੇ ਕਿਸੀ ਕਾਮਠਾ ।
ਡਾਲਦੇ ਈਸੀਕਾ ਕਿਸੀ ਮੈ ਆਨੇ ਕੀ ਫੀਵਾਰ ਮੇਂ ॥
ਮੈਥਾ—ਦਾਗ—

ਸ਼ੇਰ

ਦੁਖ ਘਲ ਕਰ ਮੇਰੇ ਸਾਕੀ ਕੀ ਸਭਾਵਤ ਯਹਿਦ ।
ਐਕ ਸਾਗਿਰ ਦੋਧ ਮਾਗੇ ਤੋ ਸਭ ਫੇਰੇ ਹੁੰ ॥
ਅਯ ਧੀਰ ਦੁਖਿਏ ਦੋਧ ਯਹਰਤ ਸਾਕੀ ਸੇ ਅਡਰਹੈ
ਸ਼ੇਰ

ਮੇਂ ਯੁਨ੍ਹ ਘਰ ਪਿਲਾਏ ਕਥਾ ਹੁਸ ਰਹਾ ਹੈ ਸਾਕੀ ,
ਘਰ ਘਰ ਕੇ ਪੀਤੇ ਆਪਿਰ ਪੈਮਾਨਾ ਆਦਮੀ ਹੈ ,,
ਅਮਾਹ ਆਧਿਏ ਆਪਣੀ ਕੀ ਫੇਰਥੀ ਯੇਹ ਫੁਲਰੇ ਕਾਨ ਸਾਹਯ
ਹੈ ਆਠਾ ਦੁਖਲਿਆ ਯੁਧ ਯੇਹ ਤੋ ਮੁਨ੍ਹੀ ਗੋਰਯ ਰਾਮ ਸਾਹਯ
ਕੇ ਸਾਹਯਯਾਹੈ ਹੈ—ਅਕਸੋਸ ਕਥਾ ਗੋਰਯ ਰਾਮ ਸਾਹਯ ਯੁੰ ਸ਼ਰਾਯ
ਮੇਂ ਘਰਯਾਏ ਹੋਨੇ ਕਾ ਕਮਾਧਿ ਕਰਕੇ ਰਘਯਏ ਹੈ ਯੇਹ ਵਹੀਂ ਮਸਲ
ਹੈਕਿ ਆਪ ਕਮਾਏ ਯੈਟਾ ਉਡਾਏ, ਆਰ ਯੇਹ ਟੀਸਰੇ ਕਾਨ ਲਕਾਏ
ਸ਼ਰੀਕ ਹੈ—

ਅਯਯ ਯੁਧ ਪਛੇਯਾਨਾ ਪੰਡਿਤ ਕਸ਼ਨ ਸਾਹਯ ਕੇ ਯਿਯਿਰਾਗ
ਹੈ ਯੇਹ ਯਹਾਂ ਕਠਾਂ ਉਸ ਰੋਜ਼ ਤੋ ਉਸ ਯੇਯਾਏ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸੇ
ਰੇਲਵੇ ਮੁਸਾਫਿਰ ਆਨੇ ਮੇਂ ਲੜ ਪਏਏ ਖੰਟਾਂ ਸਲਵਾਤੇਂ ਸੁਨਾਧ

नहीं- कुछ प्यात भी नहीं न आलुम चूट या सत्र कर
हात से हनुवर के उपर पानी डी छींट न पड़ी थी अथ इनसे
कोई पुछे येह शराब ने आप पीने को मुसलैद हैं कैसी हैं
नेकि नापाक होने के अलावा गलीज भी है इसको पीते
वक्त अक्सर लोग देखते हैं कि इस में सैकड़ों मच्छड और
बकभियां और कीड़े मकोड़े सड जते हैं जिससे कि फिर
शराब भीयी जाती हैं अक्सोस सड अक्सोस वहां जन्म
पत्तरा बनाये और वहां पर इस कम्पत्त को मुंह लगा
कर मजे उठाये-- आज कसई पुल गध आंख से देखलिया
अथ क्या मुकेशोंगे-मगर और हम किसीसे न कहेंगे वरना
तुम्हारे पंडासियों के नुकसान होगा मगर शर्त येह है कि
अथ यहां न देखें-और अथ हम किस किस का नाम लें
यहां कैई उजले पोश में नौश पुद इराभोश मौनुद
हैं वो देखिये कुरसियों पर उट गये

और हो जर्ज मगर जर्ज न में जाने से ॥

अहद शीशे में तो पैमां है पैमाते से ॥

ला बाई ला क्या दर हय शीशे युन दिये गये काष्म
रथ दिये गये यहां क्या थान्दौर शिइ-जम पर जम मढाये
गये फिरली और ला और ला और ला की सदा काधम
अथ क्या था नशा ही आनद शिइ हुई कोई कुरसी से

ਨੀਥੇ ਗੀਰਾ ਕਿਸੀਂ ਕਾ ਸਰ ਨੀਥੇ ਪੈਰ ਕੁਰਸੀ ਪਰ ਤੇ ਮੁਛ ਸੇ ਥੀਸ਼ਾ
 ਲਗਾ ਹੈ ਐਰ ਗਾਨਾ ਛੋ ਰਹੇਹੈ ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਅਸਕੋ ਅਥੀ
 ਅਥੀ ਤਰਹੁ ਨਸ਼ਾ ਤ ਘਟਾ ਥਾ ਕਥਾਯ ਕੀ ਰਕਾਥੀ ਉਠਾ ਕਰ
 ਘਲੇ ਮਗਰ ਨਸ਼ੇ ਕੀ ਯਾਦਗੀ ਨੇ ਜਮੀਨ ਪਰ ਘਿਠਾ ਦਿਯਾ ਘਸ
 ਜਮੀਨ ਪਰ ਫਰਾਜ ਹੋ ਗਏ ਧਸ ਕਾ ਮਯ ਕਾਘਿਲ ਦੀਦ ਹੈ ਕਥੇ
 ਕਰ ਤਹਰੀਰ ਕਰੇਂ ਹੁਸੀ ਕਲਮ ਘਲਾਨੇਸੇ ਮਾਨਾਹੈ—ਕਛ ਕਛ ਕਛ
 ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ.....ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ—ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਘੀ
 ਕਥਾਯ ਤੇ ਲੁਕਮੇ ਲੇ ਰਹੇ ਹੈ ਐਰ ਉਨਕੇ ਮੁਵਨਨਸ ਕੁੱਤੇ ਸਾਹਯ
 ਥੀ ਸਾਥ ਹੀ ਕਥਾਯ ਘਯ ਰਹੇ ਹੈ—

ਸਮੁਤ ਅਕਸੋਸ ਹੈ ਧਸ ਕੀ ਛਾਵਤ ਐਰ ਆਵਤ ਪਰ ਨੇ
 ਘ ਘਸਮ ਘੁਦ ਧਸ ਛਾਵਤ ਕੋ ਦੇਖ ਕਰ ਥੀ ਧਸ ਕਮਘਮੁਤ
 ਕੋ ਨ ਓਡੇ ਘੁਦਾਵਨਦ ਕਰੀਮ ਹੁਰ ਐਕ ਅਹੁਲੇਧਮਾਨ ਕੋ ਧਸ
 ਸ਼ਰਾਘ ਘਾਨੇ ਘਰਾਘ ਸੇ ਮਹਕੁਯ ਰਥੇ ॥

ਪਾਂਚਵਾ ਘਾਘ

ਮੁਝ ਘਲਾ ਥਾ ਕੁਰਕਤ ਮੇਂ ਘਿਰਾਯ ਪਸਤੀ ।

ਕਾਮਘਾਘਾ ਤੇਰੀ ਤਸਵੀਰ ਕਾ ਰੋਗਨ ਕੈਸਾ ॥

ਘਤੋ ਕਿਤਾਘਤ.

ਘਵੀਲ—ਦੇਖਿਯੇ ਕਲਤੋ ਜਘਾਘ ਲੇਕਰ ਘੋਹ ਨ ਫ਼ਿਰੀ ਸਾਥਦ
 ਛੋਕੋ ਅਥੀ ਨ ਮਿਲਾ

રિયાજ—દેખિયે વહ સામને લપકતી ઝપકતી ચઢી આ રહી
હય;; ખઢીલને ખત લેકર ચાકકિયા ઓર પઢને લગા,

જનાખ મન

અફસોસ હૈ મુઝકો આપકી તહરીર પ્યારીકા લક્ષ્જ કિસી
અજનબી ઓર ગૈર લડકીકે વાસ્તે ઇસ્તેમાલ કરના ક્યા
દુરેસ્ત હય ક્યા તુમ મુઝકો ખૈખખર કિયા કરતે હો ક્યા
મુઝકો ઇતની ભી ખખર નહીં કિ કિસી ગૈર શખ્સ સે
રખખત પૈદા કરકે બદનામહુ મેં સચ કહતી હુ મુઝકો જરા
તુમસે ઉલ્લેખ નહીં હૈ તુમકો મુઝસે હરગીજ ઐસી ઉમ્મેદ
ન રખની ચાહિયે કિમેં આયન્દા તુમહારે ખત કા જવાબ
લિખું સિર્ફ તુમકો આયન્દે કે વાસ્તે હિદાયત કરદી ઐસી
તહરીર મુઝકો બહોત રંજ પહોચાતી હય તુમકો ઐસી
તહરીર હરગીજ ન ભેજની ચાહિયે જિસમે મેરી ઓર
તુમહારી દોનોં કી બદનામી હો બલ્કિ તદખીર ઐસી કરની
ચાહિયે કિ જિસસ આસાનીસે તુમહારે દિલસે મેરી ઉલ્લેખ
કતઈય નીકલ બય ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે ચેહ ખાર
નિકલ બય યાની મુઝકો કોઈ અગુસ્ત તુમા ન કરે ઓર
તુમહારે ખયાલાત ભી ચકબ રહે ઈસ ખત કા જવાબ દેખને
કી મુઝકો હરગીજ જરૂરત નહી તુમ જરૂર ઈસ ખત સે સબક

લેકર ખયાલ બદ છોડદાગે કવી ઉશ્મેદ હૈ અતેર સ્યાહ ધખ્ખે
કા ખત દિલ સે નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા

રકીમા ખ્યારી

ખલીલ—અફસોસ હાય લીજીયે ક્યા ઉશ્મેદ કી જયે હમતો
વહલી નસહ ચેહ ખત ક્યા હૈ એક નસીહત નામા સચ હૈ
તદખીર કિસ્મત કી ખુરાઈ નહીં જતી

રિયાજ—(દેખો ચેહ કહકર શુરૂ સે આખિરતક પઢગયે)
વાકઈ અગર ઇન્સાફ સે દેખા જય તો બિલકુલ સચ અબ
ક્યા કિયા જય (ફિર ગૌર સે ખત દેખકર ચોર પઢકર એકાએક
ઉઠવકર) ખુબ હોસ્ત અબ શિરની ખિલા ઓ અબ તુમહારી
મુરાદ પુરી હોગઈ

ખલીલ—વાહવા આપ મુઝકો ક્યાં ખનાતે હંચ સાફ જવાબ
તો લિખદિયા ખલિક આયન્દા ખત કે જખાબ કો લી ઈન્કાર હૈ

રિયાજ—લુત્ફ તો ચેહી હૈ કિ ઈસપર લી તુમ કામ યાબ
હો જખાગે અખતો તુમ હોશતોં કી અખ્યારી કે કાખિલ હોગે

ખલીલ—ક્યા અબલીકોઈ તદખીર જહનમેં આઝહૈ

રિયાજ—તદખીર ક્યા તુમકો ઉસને હીં કામ યાખી કી ઉમતેદ
દિલાદી તુમને ઈસ ખતકો ચોર સે નહી પઢા દેખો આખિર સતર
કા આખીરી જુમલા ફિરસે પઢોગે; સ્યાહ ધખ્ખેકો ખતેદિલ સે
નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા ચેહ ઈશારા હય

ગોયા ઈસ ખતમેં સ્થાહ ધખમેહું ઉન સતરેં કા નિકાલ
કર પડો

ખલીલ-દેખું આહ હાહાહાહા વાહ

ઉસી ખતકા અરલી મજસૂન

જનાબ મન

અફસોસ હું મુઝકો આપકી તહરીર ખ્યારે ક્યા તુમ મુજકો
ખિલકુલ મે ખબર ખયાલ કરતે હો ક્યા મુઝકો ઇનીલી ઉલ્કત
નહી હય તુમકો મુઝસે હરગિજ આમીં ઉમમેદ ન રખની
આહિયે કિ ઐસી તહરીર મુઝકો રંજ પહોચાતી હય તુમકો
કોઈ ઐસી તદખીર કરની આહિયે કિ જસહે આસાની સે
તુમહારે ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે થેહ ખાર નિકલજાવે
યાની એકજરમેં ખાસ ખત કા જવાબ દેખનેકી મુઝે કવી
ઉમમેદ હું

રકીમા ખ્યારી

રિયાજ—તો ઓર ક્યા લોગે ક્યા ખતકે જમાબ મેં વોહ
ખુદહી ચલી આઐ મગર દેખો દોસન ક્યા અકલ મંદ
લડકી હૈ મજમૂન દેખો કિતના ઉમ્દા ઓર જુ માની હૈ કિ
જસને ખિલકુલ ના ઉમમેદ કરેકે ઉમમેદ દિલાદી ગજબકી
આકિલ હય દેખિએ અગર કોઈ દુસરા ઈસ ખતકો સરાસરી
તૌર પર દેખે તો હરગીજ થેહ ખતલખ નહીં નિકાલ સક્ત

ખત્રીજ—હાય ક્યા પ્યારી હય તહરીર ખસ હાયે
ચુમતે દુસરા ક્ય મુઝહી કો ઘોક મેં ડાલ દિયા (ખન કા
બોસા લેકર) હાય નામ ભી ક્યા પ્યારા હૈ “પ્યારી” સચ
હય હોભી તો તૂ પ્યારીહી ।

રિયાજ—દોસ્ત ઉસને ઈસમેં તુમહારી અવજ કી ભી અંચકી
હય ઇતકાક હી સે ઇસ વક્ત મતલબ નિકલ આયા વરના
બડે અહમક ખનતે ॥

ખત્રીજ—અમ ક્યા જનાઈ લિખના ચાહિયે મજમુન નિગારી
તો મુઝે ઈસ વક્ત સૂઝતી નહીં દો હરફ મેં જવખ
લિખે દેતા હૂં ।

કાગજ કલમ ઉઠા કર થોં લિખદિયા

જન ખલીલ

તુમહારે ખતને મસીહ ઈ કરકે મુઝ કરીમુઝ મગર
જન બખ્શી આગર તુમ કર સકતી હો તો સખ કુછ હો
સક્તાહૈ મેં હર તરફ રખાંદ હૂં મેંતો અપને કો તુમહારે
નજર કર ચુકા હૂં

સેર—તરવીમ ખમ હય જો મિજાજ યાર મેં અઝે
દેખીયે પરદા હિજર દરમિયાં સે કમ ઉઠે

ખલીલ

રિયાજ હુસેન કો ખત સુનાકર કલ્લો કો નજર કિયા ઓર
હો રૂપે ઈનામ દેકર રવાના કિયા રૂખસત રૂખસત ॥

છટા બાળ

દોનોં આલમ કી મુયસ્સર મુઝે દૈલત હોગઈ
 નમવર પહેલુ મેં બે વોહ ચાંદસી સૂરત હોગઈ
 પયામે ચાર

નાજરીન--આજ કરીખ એક માહ કે બાદ હમ આપસે
 મિત્રે હૈં કયોં કિ ઈસ અધ્યામ મેં કોઈ ખાસ ખાત કાખિલ
 નોટ કરનેકે નહીં હુઈ સિવાય ખતૂતકી આમદ રશત ઈજહાર
 આરજુકે ઈસ વક્ત સૂરજ ગુરખ હુએ કરીખ ૧૥ ઘંટા
 હો ગયા હૈ મિસ્ટર ખત્રીત અકમદ સાહબ કહીં જને
 કે તય્યારિયાં કર રહે હંચ યાની સિફ અચકન વગૈરહ
 પહેન રહે હૈં કયોંકિ ઈનકા કોઈ ખાસ પહેન ને કી જરૂરત
 નહીં હુઈ હર વક્ત ઈનકા લિખાસ જરા વજ અદાર રહેતા
 હય ઈનકા કોઈ ખાસ રાસ્તા હોને કી જરૂરત નહીં મગર
 અબી યેહ નહીં ખુશ કે યેહ તૈય્યારિયાં કહાંકકી હો રહી
 હૈં અઝજ રિયાજ સાહબ આગે સખ કુછ માલુમ હોગા

ખત્રીત--દેખો વોહ ખત મેજ પર મકા હય !

રિયાજ--ખત ઉઠાકર પઢને લગતા હય ॥

ખત

જનાખ મન

ધસી વક્ત તુમ જરા સિફ ૧૦ મિનટ કે વાસ્તે હો જઓ

મેં ખાગીથે મેં મિલુંગી મુઝેકા તુમ સે કુછ કહેના હમ
આજ લાલા યહાં નહીં હય ખહોત જલ્દ આએ શરાફી
દરવાજે સે આના ॥

પ્યારી

રિયાજ—અચ્છા યેં કહિયે આજ શય અન્વલ હૈ વાહ દોસ્ત
ખલીલ—યાર હમસે તો ખાત લી કરની નહીં આતી ઓર
ખાસકર ઉસકે સામને ક્યેં કર જખાન ખુલૈગી ॥

ખલીલ—અહમદ સાહબ ખનટન કર રિયાજ હુસેન સે
ફખસત હુએ

નાજરીન—ખલીલ અહમદલી કુછ હુસ્નોં સુરત મેં કમ ન
થા ઉસને લી વોહ શકલ પાર્ઠ હય જીસ પર તમ સફલકી
હમેશા નજર રહી હય ઓર સૈકડોં આપસ મેં રકાબત
કરકે લડ મરે હય ફિર ઉસપર જરાની ઈસ વક્ત ઈસકી
ખુશીકા અંદાજ હમારે ખયાલ સે બાહર હય કલ્લો આગે
ઈતલા ફેને કો બ ચુકી હય ઈસ હસીન ચૌહદ સાલ માહકે
બેખન કો ન પુછિયે ગોયા એક હુસન કી દેવી ઉમકા સહી
ફાદ ખીંચના તો મેરે ઈમકાન સે બાહર હૈ મગર સિફ
ઈતના લિખ દેતા હું કિ નાજરીન મેં સે કોઈ કૈસાહી બહિદ
ઓર પારસા ક્યેં નહો દેખકર બે તાબના બે ખુદ હોકર દિલ
મેસોસ કર રહે બય ઈસ મેં જરા લી મુખાસિગા નહીં કિ

जोया जागीयेमे' डाह काइ से कोठ परी उतर आध है कि
 ने किसीके धन्तिजर में रोशपर टहल रही है ज्वीन
 अइमद को आते हुये देखकर झरन परामदे से होती हुई
 कमरे में ओक कुर्सी पर आ बैठी ज्वीन अइमद का कमरे
 में दायित होना था कि जरा शरमाई आव न मे येह
 सेर अदा किया ॥

वोह घर में आये हमारे पुछा की कुदरत से ।

कली हम उनका कली अपने धरेका देखते हैं ॥

प्यारी— साहेब हम ऐसी हालत में आपकी क्या
 तवज्जे कर सकते हैं योरी योरी मिलना इसमें तवज्जे की
 कौनसी सूरत है ॥

ज्वीन—(ओक जड़ी हिम्मत करके कांपती हुई आवाज में)
 साहब आप धितने क्षसिजे पर बैठी हैं (हाथ पकड कर)
 जरा धसतरद को कुर्सी पीछ कर आनध येह तवज्जे
 क्या आपकी थोड़ीहै कि इस नायीज को आपने याद किया
 प्यारी—हाथ छुडाकर) अली आप मुझे हाथ लगाने का
 हक नहीं रखते येह मे हयाध बी धिस्तेमाल नकीजये
 हाथ लगाना आसान काम नहीं जपतक आपमेरी सन्द
 बातोंका जवाब नदे ओर डाल नकरें वोह पढात मुशकिल
 सवाल हैं ॥

ખલીલ—મેરી જાન ક્યા વોહ સવ લા ઐસે મુશકિલ
 હૈં જાન્કા મેં હલન કરસકું ખુદા ન કરે યેહ નામુમકિન
 હય ઈસસે જાયાદા ઓર કાઈ સવાલ ન હોગા કિ આપ
 જાન તલબકરેં બ ખુદા વોહ બી દેને કા મુસ્તઈદ હૂં ॥

ખારી—ખેર રહને દીજીયે ઐસે તો હમને અક્સર લોગોં
 કા કહેતે સુના હય ક્યોકિ ફિકરા જખાનસે નિકાલના તો
 આસાનહય ઓર પરમેશ્વર ન કરે મેં જાન ક્યોં તલબ
 કરને લગી જખ વોહ જાન ન હોગી તૌ યેહ જાન કખ
 હોગી મગર સિર્ફ મુઝકા યેહ કહેના હય કિ ઈસ ખાતસે
 તુમ બખૂબી આગાહ હો કિ મેરી કૌમ ક્યા હયે ઓર દુસરે
 યહાં પર ઈસ તરહ મિલને સે અગર આજ ન ખુલી તૌ
 કલ જરૂર ખુલેગી ઈસ વાસ્તે અગર મુનાસીબ સમઝૌ તૌ
 યહાં સે કિસ્કી દુસરી જગહ ચલો જહાં હમ ઓર તુમ બે
 ખટકે ઐશ સે ખસર કરેં ॥

ખલીલ—ખસ યેહ સવાલ થા યેહતો ખેરે હશખ મુરાદ હય
 મેં તૌ તુમહારી રાયકા મુન્તિજરથા મેં હર વક્ત તૈયાર હૂં ॥

ખારી—ખસ તો નહીં એક મોકા આને વાલા હૈં ય ની
 આજ સે ચોથે રોજ મેં રોજ ઘાટ ગંગા સ્નાન કા જાગી
 તુમબી મેલા દખ્ખનેકા તૈયાર હોકર આના વહીં સે શખ કી
 ગાડીસે દહેલીઝી જાનિય ફૂંચ મગર યેહ હાલ કિસા પર ન

ਭੁੱਜੇ ਵੇਖੋ ਕੰਘਪਤ ਉਛੜਨ ਵਾਲੇਨੇ ਤੋ ਖੁਡਾਨੇ ਪਰ ਮਯਪੂਰ
ਕਰ ਨਹੀ ਹੈ ਐ ਮੋਹਯਪਤ ਧੇਹੁ ਕਰਸਮੇਂ ।

ਘਈੜ—ਘਡੇਤਰਹੁਧ ਅਧ ਰਾਤ ਜਯਾਦਾ ਗਠ ਆਯੋ ਆਰ
ਮ ਕਰੇ ॥

ਨਾਜਰੀਨ—ਅਧ ਆਗੇ ਲਿਖਨਾ ਤਹੁਯਸੇ ਆਹਰ ਧਿਆਲ ਕਿਆ
ਭਾਤਾ ਹੈ ਈਸ ਵਾਸਤੇ ਰੁਪਸਤ ਛੋਟੇ ਹੈਂ ਫਾਂ ਧੇਹੁ ਭੜਰ ਹੁਧ ਤੇ
ਅੰਦਰ ਸੇ ਕੁਛਤੋ ਆਵਾਜ ਆਤੋਂ ਕੀ ਆਤੀ ਆਰ ਵੋਹੁ ਆਤੋਂ
ਲੀ ਛੋਗਠ ਘਟਿਕ ਸਿਫ੍ਰਿ ਘੁਡਿਯੋਂ ਆਰ ਪਾਯੋਧ ਕੀ ਭਨਕਾਰ
ਸੁਨਾਠ ਫੇਰੀ ਰਹੀ ਮਗਰ ਅਧ ਵੋਹੁ ਲੀ ਮਾਲੂਮ ਨਹੀਂ ਛੋਟੀ
ਹੈ ਤੇ ਘਈੜ ਆਮਦ ਮੁਕਾਮਿਲ ਪਰ ਗਾਲਿਧ ਆ ਗਯੇ ॥

ਅਧ ਆਗੇ ਲਿਖੂੰ ਮੇਂ ਸਰੋਫਸਤ
ਛੋਟਾ ਹੁਧ ਫਵਾਤ ਮੇਂ ਕਲਮ ਮਸਤ

ਸਾਤਵਾਂ ਆਧ.

ਕਅਧਾ ਆਰ ਯੁਤਧਾਨੇਕਾ ਧਨਨਾ ਧਿਗਡਨਾ ਵੇਖਾ

ਧਾਨੇ ਧਰਧਾਦੀ ਕਿਸੀ ਕੀ ਹੈ ਕਿਸੀ ਕਾ ਧਰ ਧਨੇ

ਮੇਲਾ ਸੇ ਫਿਕਰ ਕਾ ਮਯਮੂਨ

ਸੁਧਹੁ ਨਮੂਦਾਰ ਹੈ ਧਈ ਹੈ ਆਰ ਧਯੋ ਕੀ ਧਾਤੀ ਖੁਟਨੇ
ਮੇਂ ਸਿਫ੍ਰਿ ੧੦ ਮਿਨਟ ਧਾਤੀ ਰਹੁਧੇ ਮੁਸਾਫਿਰ ਅਧਨਾ ਅਧਨਾ
ਧੋਰਿਧਾ ਧਧਨਾ ਸਲਾਵੇ ਫੁਯੇ ਗਾਤੀ ਮੇਂ ਸਵਾਰ ਛੋਟੇ ਭਾਤੇ ਹੈ

આજ અજબહમ મચ્છમૂલ સે જીયાદા હૈ ઓહો આજ રાજ
 ષાટ કા મેલા હય હમારે હીરો મિસ્ટર ખલીલ અહમદ સાહબ
 લી એક તરફ ઠા ખડે હુએ મશોશ નિગાહ સે ઈધર ઉધર
 દેખ રહે હંય લો અબ ઉનકી મશૂક નિગાહ એક અજબ
 નિગાહ સે બદલગઈ યાની સામને જહાં પર એક લડકા
 જસકા સન કરીય ૧૫ સાલ કે હોગા ઓર એક અધેક
 ઉમર કી ઓરત જસકા શબાબ કા જમ ના ખતમ હુએ
 અસા હોગયા હય ઓર એક લડકી ગાડીમેં સવાર હોને કા
 બ રહી હય દેખ રહે હૈ ॥

નાજરીન ચકીન હય કે આપ પહેચાન ગયે હૈ કે યેહ
 કૌન લોગ હૈ લડકી કૌ તો જરૂર હીં પહેચાના લિયા હોગા
 વોહી હમારે ખલીલ અહમદ કી દિલદારહ પ્યારી હય સિફ
 યેહ દોનોં જૈની હૈ જનમેં સે એક પ્યારી કી
 મોંસી (ખાલ) હય ઓર એક ઉસકા ખાલા બદ ભાઈ હૈ
 પ્યારી એક અજબ અંદાજ સે સબકી નિગાહ ખચાકર પીછે
 ફિર ફિર કર દેખતી જતી હય યાની

ઉનકી તરફ નિપાહ ઠહરતી નહીં મેરી ।

દિલ મેં હય યેહ ખયાલ કોઈ દેખતા નહો ॥

બન્દી હોગઈ-મુસાફિરોં કા ગાડી મેં બેઠના અબ ખતમ
 હોગયા લીજીએ અબ વોહ સિંગલ લી ડાબિન હોગયા ગડી લી

रवाना होगध और कूट्टि बरती हुई दर्मियानी स्टेशनों का छोड़ती हुई राज घाट नरद्वर स्टेशन पर पहुँचगई गो मेला अजदी सावअच्छीतरह नहीं हय मगर बीड बी कमनही अश्नान शिड़ होगया जनाना घाट पर याशं सरे पुलपर भटे धूर रहेहैं हर एक निगाह जनपर येबाक हय किसी के अगुर नुमा पिस्तां पर ताक हय ।

एक दुसरे का मुभातिप कर के आवाज से कस रहे हैं जनारसी साडियां बी अच्छी होती हैं काँई इरमा रहेहैं नकरा इसरना देपिये काँई ये तमांशा यिइला छो

अरे यार उधर देपो अज क्यारहोगया नेकुछ रहेभी गया था वोह सादीके लीग जाने से पोशी दा न रहा मैदान जिलकुल साइ है गरजे के आजह और तैं पसन्द तभी अत वालोंके नेकुछ दिलमे आता है कहते हैं हमारे हीरो धन बी मान्हुँहै नडा धोकर इरिग होगध और अज क्यामपर आकर नया जेडा तपुदीसि करलीयाहैं नाजरिन अज मेलेडी सैर करते करते शाम होगई आइताप दीमेलेडी सिपर और भस्तुरात की धूराध रीसे इरागत पाकर मगरिअदी तई रवाना होगया और मडा ताप अपने कमसिन शौक के साथ सितारों के इस्तयाक तद्रीह में पिरामा पिरामा आरहहैं अज तकरीजन शअंके १२ पजे होंगे जाजरमे जिलकुल सन्नाटा छाया हुवा हय आमाद रक्त पंद है

हूँ येह फात है जे अवेरेमें नतड़ा प्यारी हय अयछा
 औरसे देनतेसे पड़यानतिया हमरी हारे यन प्यारी हय
 अदीन अहमद का छतिअर है अदीन भी आगये आर
 बीछये छिस्टेशन परहदुअगये देहदीका टिकट सैकिन्ड क्लास
 का ले लिया गयाहै थर्ड क्लासके वरैखी आर मुरादा पाछे
 जानेवाले मुसाफिर अयछा छगतरा में हूँ कि कहीं हमरह
 न जाय क्योंकि अजयाम जिस तरह है बीछये गाड़ी आन
 पड़ुयी सवार होअये गाड़ी छुटगई मुसाफिर अहुत रहगये
 हूँ छिस्की आवाज व रइतार में तदवीखी डेरी हो गई
 अट अट अट अट अयछा रेलवे पुन को अयूर कर रहे
 हूँ हिन्दुलोग जकारो के नारे पुलक कररहै हूँ वोअ श्री
 गंगाजी ही नै पैसा पैसा पर डैकरहै पुन अत्म हुआ गाड़ी
 सपाटे बरनेवगी लक लक प्यारी आर अदीन अहमद जैसे
 हुअेह बिबासप्यारी ने दुसरा तबदील कर लिया हय कि
 काई पड़यान नवे अइसेस हाय गजय गजय अे उइत
 अे कमअप्त तुअंका ओलाहो वासदेन से छुडाने में जरा
 अयाल नहीं होता जरा पशोपेश नहीं करने देती जेदिल
 में आताहय कर गुजरनेदेती हय तेरे हाथों अैसे भजयूर
 हो अते हूँ कि वासदेन ही जरसो छिउलएत व मैहअप्त
 आर मेहनत ही जरा परवाह नहीं करती तेरा अर्ताव आर

અસર બુદે ઝોર જવાન ઝોર બચ્ચોં પર ચકસાં હોતા હમ
ખલીલ અહમદ કો ૧૬ સાલતક પરવરખ કરને વાલે વાલદેન
કલકો ન પાકર અપના કયા હાલ કરેગે ગો વોહ બહુત ખુશદે
મગર હિન્કો ક્યા ક્યા ખ્યાલ ખદ ન ગુજરેગે

બાપુ લક્ષ્મી નારાયનકો જખ ૧૫ સાલ: લડકી પ્યાની કે
મુમહો બનેકી ખખર હોગઈ તો વોહ અપની આખર પર
ક્યા ક્યા આસૂ ખહાયેગે ચેહ હાલ દુસરોં પર બહિર કરને
હુએ કેસે કેસે ન શરમાયેગે ॥

બલિક અપની ઈજજતો આખર કા ખ્યાલ કરકે દુસરોં પર
શાયદ બહિરલી ન કરેં ઝોર દિલહી દિલમેં શક્કત પિદરી
સે અપને જીગર ગોશ: કા ખ્યાલ કરકે બુદાઈ કે ગમકે હાથોં
હલાક હો બાયેગે નાજરીન હમ દેહલી કે ઇસ્ટેશન પર અ ન
કે પોંચાકર રખસત હોતે ઈશા અદલાહ કલ મુત્ર કાત હોગી

બાબ આંઠવાં

અખતો આરામસે ગુજરતી હે

આકખત કી ખખર ખુદા બને

કયામે મજલિસ તરખ

દેહલી મેં ક્વારાસે રામા ઠેઠરી કલ કમ્પની કી તર્ફ સે
બને વાંલી સડક કે મુતસિલ એક કૂચેમેં એકમકાન

मिथुन मामूली हयसियतका है उसमें अलीन अहमद और
प्यारी बैठे बैठे बातें कर रहे हैं ॥

अलीन—यही मकान तो अच्छा मिल गया किसी किरमई
तकलीफ न उठानी पड़ेगी गुप्त पाना बपरमी पान सज
मौजुद हैं

प्यारी—हां मकान मिल गया अगर आपने किसी आदमी
की तजवीज दी अगर आदमी के किस तरह काम चल उता है .

अलीन—अच्छा तो अबमें गया किस वास्तेया सजका
बन्दो बस्त कर आया हूं यहाँ पर मेरे पडे दास्त हय
कि किसी किस्म की तकलीफ न होगी क्योंकि वोह मेरे कलास
केवो (हममक्तव) (सड़ पाठी) हैं अली गडमें पांअपरस
तक मेरे साथ तादीम पाई है और हाईस्क्रिप में वोह और
में पढते रहे हैं अलिक वोह मेरे ही मकान पर थे अब
यहां पर उन्का मकान है और एक माकुल मशार्थ रेपर किसी
कम्पनी या कारखाने में जुला लूमहैं यैतौ मेरे एक
अच्छाभी मौजुद है अगर उनसे ईस वक्त मिलना मिलाई
मसलहत है में हर बातका बंदोबस्त कर आयाहू सामान
नज़री करनीयर वगैरह अब आता होगा एक औरत और
एक लडका भी आता होगा हमें कुछ फ़िकर न करनी होगी
अब आप छत्मीनान रणिये अगर हां येहुतो क्रमाधये तुम्हारे
आने वगैरे का क्या होगा

प्यारी—आपसे प्यारे तुममुझसे आप इसभुआमिबे में कुछ न कहे। अन्वय तो में कुछ छुत जातको कुछ समझती नहीं और मेरे अकीदे की दावत तुमपर रोशन हो जायगी और दूसरे अयक्या में तुमसे जुदाहो सवती हूँ और अगर जुदा पवस्ता जुदाभी कुछ तो वोहक्या अपने साथ मुझको निवासको हूँ हरगिज नहीं में उनके नजदीक किसीकाम की नहीं

अधीन—प्यारी आप कैसी आते करती हूँ जुदा नकरें जुदाई का मनहूस दिन दिखाना नसीब हो अगर जुदाई मंजूर हैतो महारी तुम्हारी जन्मगी यकज कटेगी और हमारा मजहब अगर तुमको इस मजहब के उम्दा लबे मावूम होतो इसीकी पैरवी करो वरना तुमको छप्तयार है

प्यारी—अस इसआरे में तुमझारे कहेनेकी जरूरत नहीं है मैने अहोत किताने देभीहूँ शायद तुमको अपने मजहब में धतनी वाकईयत न होगी जतनी किमें वाकिश हूँ वो वोह कुर्सियां जगैरा आगई करीने से लगवाद्य सामान सज करीने से लगगया ॥

प्यारी—अहेतर हुवाकी तुम्हारी मुलाकात निकली

अधीन—मुलाकात क्या बाईसे ज्यादा हय (हरवाज पर आवाज हंसकर) वो वोह गिरजभा में दोस्त आगवे बुलाये लेता हूँ

મિરજાખાં—મકાન ઠીક છે અગર નહોતો દુસરા મૈબુદ છે ॥

ખડીત—મકાન બકોતડીકે છે સખ તરફ આરામ હય સામા-
નથી સખ આગયા આદમી કૈન સાલાયે

મિરજાખાં—યેહ આદમી મૈબુદ હય ઓરત શામ છે
આખાયગી

ખડીત—યેહ અચ્છા યેહ રાખત ખનાપકા સક્તા છે

મિરજાખાં—(મુઝાજીમસે) ક્યાંમે શૈરાતી

શૈરાતી—ખૂ ખૂ ખૂ ખૂ જનનાહું ઉસદિનખાયુ જીને દો
દાવત મેં દોફને કિસકે હાયકે ખયે થે આલીને ભુ ભુ ભુ
જૂત ગયે ચૈયાહી તો દિન છે

ખડીત—અચ્છા આપ હકલે લી હું

મિરજાખાં—અજી હજરત આપકે તખી અન અત કે મુવા-
ફિક હય ઝસકા ગાના સુનિયે જમ હકલી જવાન સે (અપીયા
લાગી સુન્દરબન જરગયૈ!)

ખડીત—હાં ખુબ યાદ આયા બાજ શખકા લેને અના ઓર
આપ કલી આઁ મગર હરામીનિયમ જલ્દ કિસી કે હાય લેજ
દેના ક્યોકિરાયદ આપને દફતર સે નૈ. હય ખજરતકા અતેદાગે

મિરજાખાં—બાજ મેં અલી લેજતા હું

(યેહ કહકર ખડે હોગયે ઓર કહા) લો આમ દફતર કો દેર
હોતી છે બેકાંમકો ધરપર બકર. પૂરા કરના સત્તામ અલૈકમ

ખલીલ—ફિર કબતક આધયેગા

મિરજખાં—ખસ દફતરસે વાપિસ હોકર

મિરજખાં—રખસત હુએ

પ્યારી—મિરજખાં ખિયારે બહોત અચ્છે આદખી માલુમ હોતે હૈં

ખલીલ—બહોત અચ્છી આદત ઓંર ખાસકર મેરે વાસ્તેતો દિલોઝન સે મૌજુદ હૈ (નાજરીન શામ હોગઈ) યેહલોઝ ખાના બગૈર ખાકે ફારિગ હુએ હીથે કિ બાઝ આગયા; પ્યારીકાલી હમેશા ઈદમ મૌશુકસે શૌક રહાયા દેખતેહી કહનેલગી લો અબ કુછ સુનાવો બાઝ આગયા ખલીલ અહમદને બાઝ લેકર સુર દુરસ્તકિયા ઓર યેહ ગજલ શુરૂઆ કરી

॥ ગજલ ॥

હસીન સારે જમાને મેં જો તુમસા હો નહીં સક્તા
તે ઈન્સાન ખાવફાઈ મુઝસા કોઈ હો નહીં સક્ત
બુલાનેપર હમારે ક્યા ખરે બનકર વોહ કહતે હૈં
હય વાઈદા દુસરે સે આજ આના હો નહીં સક્તા
ખૂબીસે ફેક કર તસન્વર અપની કહ રહે હૈં વોહ
કયામતતક ખલીલ આહાતુમ્હારો હો નહીં સક્તા

ખલીલ અહમદ ને ગજલ કો તમામ કિયા ઝોર પ્યારી કી
તર્ફ ઇશારા કરકે અપ્પ જલ્દ તુમ સુનાવો
પ્યારી ને બાદ ઇસરાર ગજલ શુર કી

॥ ગજલ ॥

હમારે વાસ્તે ઉન્કી નઈ તાજર નિકલી હૈ
કિ અદમિયત હાથ ગૈરૌંકે ખેહતાશફીર નિંકલીહૈ
નહીં હોતા હય ખલી ખતભી ઉન્કા છેડસે ઐ દિલ
જો ખોલાખત કો પડલે ગૈરકી તસ્વીર નિકલી હૈ
યેહક્યોં ખેલે હૈં તુમને આજ અપને ગેસુએ પેચા
કિસે પાખંદ કરને કે હિયે જાજર નિકલી હૈ

યેહ ગજલ ખતમ હોલીથી કિ મિજબાં આ મોજુદ હુએ
કો બજે સતતકે સગત રહા બાદ કા હાલ ખુદાજને

નવાં બાબ.

લાયા હય મુદતકે બિખુડે હુએં કો
ઈલાહી તેરા શુકર ક્યોંકર અદાહે
ખાના આપાદી

નાજરીન આજ ઉસરાતકો ગુજરે હુએ કરીખ એક સાલ
યા ઉસસે જ્યાદા હોગયા હય જસરાત કો મજલિસ નિશાતો
દુરખ છેડકર રૂખસત હુએ હૈ યેહ જમના લોગોંકા ઐસો

आसाम से बसर हुवा है क्वांकि भव्नीत अदुमद आदुमनी
उसकार जाने में एक भाइत तनपापर मुत्राणुम होगे
ये लुप्तमें डे मिरज्जपां थे

आज वसवस्त उस महान में क्वां नही है सिई भव्नीत
अदुमद और प्यारी है और वस तरड युद्धतू डो रडी है

प्यारी—वाह क्या ऐसी बात है किरडा आप मुत्रसे
मभनी रचना आडते हैं क्वांमें कुछ कडती हूं आपंडा मेने
रोतेहुये तत देम और कुछ अजपर मुत्राणुम नहीहुय
मेंअ सेये अ पड मत्रुत देवनी हुं वोड पडती नी बात
नहीं हुय

भव्नीत—इय नारी नमावुम तुम अपने दिवमें देव में
क्या क्वा भवत मेी जनेन से ज्ञाती डोनी मार क्वा
कहूं तुम मंजमूर करती हो यडां येड हात है

आम शिकल चगर्न गोथम मुश्किल

अज मुत्रे जडेर हो करना पडा अतत

मुत्रनिता येड हुय कि रय इरवरी डे अमार में
मेने

(अपपर सेजपर से उडाकर) देभिमेमनि सडमें या
वेड नि वकर यक करदित जियया डे नेर लडन

મિલ્ટર ખાલી રાખી રાખ્યાં રાંચોરા કલમ્બામા સપ્ત ૧૬ સાથ મેલા
મંગા રતાન સે ગુમ દોગાતા હેના

હરચન્દ તલાશકિયા ચાર માલ સે દતા નહીં જે સાદખ
મિલાન દેં ૫૦) રૂપે નજર કરે

યેહ પઠકર મેને યુના સિખ સમગ્રા કિમં વ્યપની ખેરિમત
વાલદેન ડો બેજદુ યુનાયે મેને વ્યસત્ર બેહુયા બનકે સિખકિયા
ઝાર અર્જ કાશ ન કરને કી સખત તાકીક કરકી હય યુના-
યે: હસપર અમત હુવા યેહ પઠાં પર આકર મુઝકાં સહી ન
સાલિમ દેખાયે

આજ યેહ ખત-(ખત નિકાલ કર) આયા હય તુમ્હારે
બડે બાઈને રહતતકી હાય મેરા લાઈ મુઝપર બડા મહર ખાન
કા મુઝમે જમતનકુત તુમયે ગસતકુતન ખપતક બહિર ન
કિયા અફસોસ અફસોસ રકકર.....ખૈર જે કુછકો
અમ કયાં છુપાઈ દેખે. એકખત સે મહુલ હુવકે તુમ્હારે
વાલદેન મે તુમકો મુકયા તૌરસે પકોત તલાશ કિયા.

ઝેર તુમ્હારે ગમમે એક માલકે આગે પીઠે રહલત
કરગયે ખૈર ખ્યારી અમ સત્ર કરના ચાહિયે બજુજ સખર
કે કયા ચરાઈ યેહ દિન અમકો નસીમ હોતા હૈ નીયે ખત
મેં વાલિદ સાદખ યેહમી તહરીર ફરમાતે હય અમ બજુજ
તુમ્હારે મેરા ડોન હૈ ઝેર મેરી જાન્ગીકા કુછ કયામ નહીં

લિહાજ અખ તુમ અપના ધર સલાલો ઝોર ખા કાયદા
નિહાહ કરેકે ઐશસે જીન્દગી ખસર કરો અખકત મેને
મશહુર કરકખા હય કે અપતે મામૂલ પાસ દિહલી મેં હય
અગર તુમ કહોતો મેં આકર તુમ્કો લેજાજી અખ મેં તુમ્હારી
મરજીદેખ તાહું કે ક્યાહૈ જવાખ ક્યા લિખું

પ્યારી—હાય વાલિદલી ગુજરગયે ખૈર મેરે વાસ્તે ઉસીકિ-
ન ગુજર ચુકયે જીસદિન મેં અઝી ગઢકા ખેરવાહ કહકર
ઉસ તર્ફ રવાના હુઈ

અખતો મેં હરતરહ તૈય્યારહું આપ જરૂર લિખવીજીયે કે
આકર લેજાવેં ક્યોંકિ ધસ તરહ કલતક ખસર હોગા મગ-
રબહ જરૂર લિખવીજીયે કે મેરે અસ્ત હાલસે કિસી કો
આગાહ નકરેં

ખત્રીત—યેકતો ઉન્હોંને ખુદહી લિખદિયા હૈ ગરજ કે ખત
લિખદિયા ઝોર મુંશી અતાહુસૈન સાહખ તીસરે દિન મય
સામાન આ મૈજુદ હુએ ઝોર પ્યા કાતો ઉરસ ખનાકર
અજમ અઝીગઢકા કિયા પીયારી ખત્રીત કરેકે
હસીના નામ રખ્યા ગયા અતાર હુસૈનખી લુખા મિસ્લ
ખત્રીત અકમલકે ખુખ સૂરતી દેખકર બહોત ખુશ હુએ
અઝીગઢ આન પહુચે અકલે દરબાર જૈ જૈક મુખારક
ખાદીકો અરહ થે તમામ ધર મુંશી આતા હુસૈન સાહખ
મસ્તૂરાત સે લરાયા ફલહન કી રતુમાઈ હોતી ખત્રીતી

ખારી ઈસ્લામી લિખાસ પહેને હુએ દર હકીકત ઈસ્મવા મુસ-
મ્મીવનીથી કુછ અસે મેં સાસ ઓર મુસરે કે દિલમેં
હસીનાને અપની ખુશ હકૂમી સે દિલમેં ઘર કરલિયા ઓર
ઓર સખમેં દેહલી વા લી મશહુર હોગઈ

નાબરીન—ઈસ શમાઅ ખરાશી કી માફી માગ કર હમ-
જા સત હોતે હું ફિર મિલેંગે અગર ખુદા લાયા

આજિજ અખ્દુલ શમદ

ચે નોવેલે તમામ હુઈ.

ફરજંદકો પીદરકી નસીહત.

એક શખ્સને અપને બે-વકુફ લડકેકો નસીહત કી, કે
અય ફરજંદ ! જો ઔરત સામને આવે ઉસે નઝરે બદસે ન
દેખના, કોંગે જો ગયેર ઔરત હો, ઓર વોહ વોહ છોટી
હો, તો વોહ બેટીકી ખરાબર હો, ઓર ખરાબર ઉમરકી હો, તો
વોહ બહેન સમજના, ઓર જો બડી હો, વોહ માં હો લડકા
જો અકલમંદ થા ! વોહ ચે મુનકર ચુપ રહા, જખ ખાપને
ઉસકી શાદી કહરાઈ, તો ઉસને કહા, અય પીદર બુઝુર્ગવાર !
આપ ચે ફરમાઈયે, કે મેં શાદી કીસસે કહંગા ! બેટીસે યા
બહેનસે યા માસે !

જુતીયોંકા તુફલ.

લખનકો એક શોહદને એક ઢાં રઈસોંકી હાથવત કી,
જમ લોગ ખાને લગે, તો શોહદને ખજને પુદ રઈસોંકી
જુતીયાં ઉઠા ઉઠાકર એક કાઠડીમેં રખના શુર કીયા. જમ
લગ લોગ જમા હોગયે, તો જુતે ફેરાંખત કરકે બાઝારસે
દાખવનકા ઈતેઝામ કીયા.

એક રઈસ—મઠી માશા અલીહ ! હુસ્ને ઈતેઝામકી તાઅ-
રીફ નહીં હોસકતી.

દુસરા—મેશક ! તાઅરીફ નહીં હોસકતી, ઝોર દસ્તર
ખાનસે બી બહોત તકલુફ કીયા હે.

તીસરા—ખાનેબી બહોત મઝેદાર હે.

શોહદા—યે સખ હુશુર હીકી જુતીયોંકી બ—દોલત હે ઝોર
હુશુર—હીકી જુતીયોંકા સદકા હે !

લોગ જમ રખસન હોને લગે, તો કીસીકા જુતા નથા.
ઈસલીયે અપને મકાનસે મંગવાકર ધર સીધારે.

બે—ન માઝીકે હાથકા ખાના ન ખાના.

મંદ સાહેબોંકા બેકે મુત્ત-તકી પરહેઝગાર થે, ઉનકો સફ-
રકા ઈતેફાક હુવા. અસનાયે રહામેં એક ગાંઉકે નજદીકે સાખ
હુઈ, તો કયામકી ઝુરરત પડી. જમ ગાંઉમેં પહોંચે તો

માઅલુમ હુવા, કે યહાં ન કોઈ મસજીદ હો, ન સરાયે. અબ
હાં જયે ! સખસે બડી ફીકર ચે હુઈ, કે પાસ ખાના મૌબુદ
શા. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા પકા હુવા ખાના છુતે તક નહીં
ચે. બહોંત તલાશકે બાદ માઅલુમ હુવા, કે ઈસ ગાંડમે સીઈ
એક બેવા મુસલમાન ઓરત નમાઝી હો. ચે સાહેબ બડી ખુશી-
સે ઉસકે મકાનપર ગયે, ઓર કેહને લગે, કે હમ પરદેસી
મુસફીર હૈ. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા હમ કુછ નહીં ખતે,
આજ તુમ હમારે વાસતે ખાના પકાદો, તો બહાત એકસાત
હોગા. બેવાને મંજુર કીયા, ઓર ખાના ખીત્રાયા, ઓર અપને જુ
ધરમે ઠેહરનેકા જગા દી. બેવાકો મગરેબકે વક્ત નમાઝ અદા
કરતે દેખા, મગર ઉસકો વુજુ કરને નહીં દેખા. તો ઉનકો
ખ્યાલ હુવા, કે શાયેદ ઈસકા વુજુ અસરકા હોગા. બેવાને
ઇશકે વક્તખી ખીત્રા—વુજુ નમાઝ અદા કી. તો ઉનકો ખ્યાલ
હુવા, કે ઈસકા વુજુ ખતા નહીં હુવા હોગા. લેકીન જખ ફજ-
રકો ઉઠકર બેવાકો ખીત્રા—વુજુ કીયે નમાઝ અદા કરતે દેખા.
તો ઉનસે રહા નગયા. પુછા કે ઈસકી ક્યા વજેહ હો, કે તુમકો
મગરેબસે અખતક વુજુ સરતે નહીં દેખા. બેવાને જવાબ દીયા,
કે મેરે ખાવીંદકો મરે હુયે પુરે દસ બરસ હુયુ, જખસે મેરા
વુજુ આજ તક નહીં દુટા ! હઝરતને લા—હોલ પરહકર કહા
કે તેરી નમાઝ લક્ષી હો, બેવાકો ચે ખાત ખુરી માઅલુમ હુઈ.

ઝાર કેહને લગી, કે લા-હોલ અપને ઘર બકર પડે. જો તુ-
મ્હારી એરેઓંકા વુઝુ હુટે ! ઝાર ગાંઉકે નંબર દારસે કેહકર
ઉનકા નીકલવા દીયે, કે યે બદ ચલન હે !

મતલબી અંધા હોતા પે.

એક ઠાકર સાહેબ દો માર ગાંઉકે જમીનદાર થે, ઉનકા
એક ચમારી પર દીવ આગયા, મોકા હુંડતે થે. એક રોજ
ચમારીકા તનહા ઉસકે મકાનમેં આટા પીસતે દેખા, મોકા
અછછા તનહાઈકા હાથ આ ગયા. ચમારીકા હાથ પકડ લીયા
ચમારીને જખ દેખા, કે બેબસીમેં ઈજજત બીગડતી હે, તો
ખંદા—પેશાનીસે ઠાકર સાહેબસે કેહને લગી, કે ઈસ કદર
મોકી તલાશકી ક્યા ખુર્રત થી ! મુઝે સાફ કેહહેતે, મે ખુદ
રજામંદ થી. દેખો આટા વગેરા મેરે હાથેમેં લગા હે. ઉસકા
ધો-ધાકર સાફ કર આઉં, અગર ચકીકા આવાઝ ખંદ હો-
અયેગા, તો ઘરકે લોગોંકા શુખા હો અયેગા, ઈસલીયે તુમ
ચકી પીસો, મેં હાથ મોંહ ધો આતી હું. ઠાકર સાહેબ
ચકી પીસને લગે. ચમારી ઘરમેં ગેઘ, ઝાર અપને બાપસે
મે કીરસા કહા, બાપને લડકીકા રોક લીયા. ઝાર ઠાકર
સાહેબકે બાપસે બકર શીકાયત દીયા, ખેર સુખતમેં ઉનકે
લડકેકા ચકી પીસના ખતલાયા. જખ ઠાકર સાહેબકે બાપને

આકર વાકઈ ચે હાલ દેખા, તો ઉસ પર બહોત ખશ હુયે, કે રચાયા કયસી તામેદાર રહેગી ? લડકેને જવાબ દીયા. કે અબસી રચાયા તામેદાર નરહે, તો કયા કરું ? આટા પીસ-કર તો ખીસાતા હું !

ન બાસી બચે કુત્તા ખાયે.

એક સાહેબ અપને અજીઝકે મેહમાન થે, બવકતે સુન્દો, મેહમાનને સાહેબે-ખાનાડી ગયેર હાઝરીમેં નોકરોઢા કહા, કે કુછ બાસી ખાના અગર હો, તો લે આઓ, નાશતા કર હું. નોકરને બે-સાખતા જવાબ દીયા, કે કિબલાય હાં તો ચે હસ્તુર હે, કે ન બાસી બચે ન કુત્તા ખાયે. ખિચારે મેહમાનકો બહોત ખીજલત હુમ, ઝોર ખામોશ રેહ ગયા.

મલેકલ મોતકા ઘોડેમેં ચાના.

એક બુઝુર્ગકે મકાનમેં હો શખ્સ એકહી નામકે આકર મેહમાન રહે. દોનોં બરાબર ચાર પાર્ઠીયોંપર સોતો થે, દોનોં સાહેબોંકે નામ અબદુશ-શકુર થે. ઇતેફાકસે ઉનમેંસે એક સાહેબ સખ્ત ખીમાર પડે, જખ કે એક દીન ઉનકી હાલત બહોત નાજુક થી. તો દુસરે અબદુશ-શકુર અપની ચાર પાર્ઠી ઉઠાકર ચલદીયે. ઝોર ઉસ જગે સોના ઘોડ દીયા. જખ

किसी दर्याकत डीया म्युं मोसवी साहेब, आपने यहाँ सोना
क्युं छोड डीया ? मोसवी साहेब जेसे, पात ये हे, डे मुअ
यकयेक ये ज्यास पयदा हुवा, डे हम दानों हमनाम हें, जार
अज हुसरे अजदुश-शकुर करी मुस सर्ग हें, मुमकीन हे, डे
मवेकल मोत घोडेमें जजये उनके मेरी इह कज्ज करे !

छपाके धजहार करनेवाले

हुसेन मीरजा जुकसेलर,

करीशड, पोस्ट नं० १३, मुंजध.

आ पुस्तक अनंतदास रामदासीने छापा, साभतनुं आल
जोरक्षु मुद्रशाखभां छपान्युं.

ઈધરબી તો દેખો

અલેક્ લેલા હબર દારતાન રૂ. ૪	શરીર કરચલા	૦-૧-૦
દારતાન અમીર	સુખોડા રીતારા	૦-૪-૦
હમજા રૂ-૮-૦	શાહાદત નામા	૦-૨-૦
દાતમનાઈ ૭ મવાલ પુરે રૂ. ૧	સમાવત નામા	૦-૨-૦
રોજતુરસોદા માને ૧૦ મજલીસ ૧	કીરસા ગુલમાનોવર	૦-૫-૦
જગનામા મોહમદ હનીફ રૂ. ૧	ગુલઝરે પંજતન	૦-૩-૦
કિરસા મુલખકાવલી ૦-૧૦-૦	કી.હાલમા ગલોરીશાહ	૦-૩-૦
કિરસા સોતા કલાની ૦-૧૦-૦	નાજની પાન ખાતસરી	૦-૩-૦
કિરસા મુલુદ જુલેખાં ૦-૧૨-૦	કીરસા ચાર હંવેશ	૦-૧૦-૦
આદમહીલ હીસ યાને	હીસિતલ મુસલેમીન	૦-૮-૦
ગુલામર હુસી ૦-૧૦-૦	કુજતુલ દીસલામ	૦-૨-૦
કિરસા ફસાને અબાયમ યાને	વફાતનામા શાહીનામા	૦-૨-૦
અન્નુમનઆરા ૦-૧૦-૦	ખુદાવી રહેમત	૦-૨-૦
કિરસા મલેક મોહમદ આર	તારા ખુરશીદ	૦-૪-૦
પરીગેતી અફરોજ ૦-૧-૦	કીરસા હલીમાદાદ	૦-૨-૦
લેલા મજતુ ખાતસવીર ૦-૪-૦	નોવેલ જવાન બીગી	૦-૧-૦
કિરસા તમીમ અન્શાની ૦-૩-૦	મશતવી બેહેરે ઈરક	
મોલુદ મુલઝરે જન્નત ૦-૪-૦	ખાતસવીર	૦-૮-૦
કિ.જેતુન મોહમદ હનીફ ૦-૩-૦	નોવેલ પિયારીકા આશક	૦-૪-૦

આશંકા બુલબુલ	૦-૨-૦	રત્નબાજકી હરિશ્ચંદ્ર	૦-૨-૦
હરીશ્ચંદ્ર બુલબુલ	૦-૨-૦	આશંકાબાજકી ઉંડાણ	૦-૨-૦
નીલાશંકા બુલબુલ	૦-૨-૦	આશંકાંકી બેકલી	૦-૨-૦
રત્નબાજ બુલબુલ	૦-૨-૦	ગુનચે કવવાલી	૦-૨-૦
નાગેશ બુલબુલ	૦-૨-૦	કલામે દાગ	૦-૨-૦
ગુલબાજે કવવાલી	૦-૨-૦	કલામે અમીર	૦-૨-૦
ગુલબાજે મલીના	૦-૨-૦	નુરહીપૂતલી હુરેઆમ	૦-૨-૦
કીરોડે વનના	૦-૨-૦	પાકીયે સદલી નાટક	૦-૨-૦
બેલીના બેબન	૦-૨-૦	ગાજે મેહિશીવ	૦-૨-૦
રત્નબાજકી વેક	૦-૨-૦	આતમી નાગ નાટક	૦-૨-૦
રત્નબાજકી હુબમત	૦-૨-૦	મજરે નખા ખાતસવીર	૦-૨-૦

✽ અંતરે હરિશ્ચંદ્રા. ✽

ખરીશ્ચંદ્રા કીતાબે અગાઉ વગર અપના પુરા પતા ચાને
નામ-મુકામ-રોડ જગા ઉલ્લેખ છે. આ મુજરાતી હોદ્દામે છે.
આ હોદ્દામે હરદેમે કીખતા આદમિ ખત સાફ ન લીખનેમે
હસ ખતકા માલ આ જગામ નહીં બેજા ખતા છે.
આર ૧ રૂ સે કમકા વી. પી. કીસીકા બેજા નહીં ખતા.

હરદેસમકી કીતાબે મોકલેકા પતા:—

હુસેન મીરઝા બુકસેલર,

કરીશ્ચંદ્ર, પોસ્ટ નં ૧૩, મુમ્બઈ.

